Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : और आसमानों और ज़मीन पर बादशाहत अल्लाह ही कि है और उस पर भी जो इन दोनों के मध्य है। वह जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे दाइमी क़ुदरत रखता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

बदर

साप्ताहिक क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 6
अंक- 25

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 ज़विल कअदह 1442 हिज्री कमरी 24 इहसान 1400 हिज्री शम्सी 24 जून 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

रात के समय दफ़नाना

(1340) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति की नमाज़-ए-जनाज़ा उसके दफ़नाए जाने के एक रात बाद पढ़ी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा खड़े हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा : यह किस की क़ब्र है? लोगों ने कहा : अमुक की क़ब्र है। कल रात दफ़न किया गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी।

*हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीऊल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के आधार पर जो इब्ने हबान ने नक़ल की है कुछ ने यह फ़तवा दिया है कि रात को दफ़नाना मना है। इब्ने हबान की रिवायत के ये शब्द हैं نَّ النَّبِیَّ ﷺ زَجَرَاَنۡ یُّقۡبَرَ رَجُلٌ لَیۡلًااِلَّااَنۡ یُّضۡطَرَّاِلٰی ذٰلِكَ (फ़तह अल्बारी भाग 3 पृष्ठ 265) अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया कि मजबूरी के अतिरिक्त मय्यत को रात में दफ़न की जाए। कुछ फुक़हा ने इस रिवायत की बिना पर फ़तवा दिया है कि रात को तदफ़ीन मना है। ये फ़तवे रद्द करने के उद्देश्य से बाब 69 क़ायम किया गया है इमाम मुस्लिम रहमहुल्लाह ने भी एक व्यक्ति के रात को दफ़नाए जाने के बारे में एक रिवायत नक़ल की है इस में भी यह वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और हिदायत की कि اِذَا كَفَّنَ اَحَدُكُمۡ اَخَاهُ فَلۡيُحۡسِنۡ كَفۡنَهٗ जब तुम में से किसी के सपुर्द अपने भाई की तजहीज़ और तकफ़ीन हो तो अच्छी तरह तजहीज़ और तकफ़ीन करे। इस से ज़ाहिर है कि नाराज़गी की वजह नाक़िस तकफ़ीन थी।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

अरबी भाषा सीखें क्योंकि अरबी भाषा के बिना कुरआन का मज़ा नहीं आता।
आदमी के लिए अनिवार्य है कि तौबः तथा इस्तिग़फार में लगा रहे और देखता रहे कि ऐसा न हो, बुरे कर्म सीमा से गुज़र जाएं और ख़ुदा तआला के क्रोध को खींच लाएं।
उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्चा मज़हब और तौहीद

इस ज़माना में मज़हब के नाम से बड़ी नफ़रत प्रकट की जाती है और सच्चे धर्म की तरफ़ आना तो मानो मौत के मुँह में जाना है सच्चा धर्म वह है जिस पर भीतरी शरीयत भी गवाही दे। जैसे हम इस्लाम के नियम तौहीद को पेश करते हैं और कहते हैं कि यही सच्ची शिक्षा है क्योंकि इन्सान की फ़ितरत में तौहीद की शिक्षा है और प्रकृति के दृष्य भी इस पर गवाही देती है। ख़ुदा तआला ने सृष्टि को अलग-अलग पैदा करके तौहीद ही की तरफ़ खींचा है। जिससे पता चलता है कि तौहीद ही स्वीकार थी। पानी का एक बिन्दु यदि छोड़ें तो वह गोल होगा। चांद, सूरज सब आकाशीय नक्षत्र गोल हैं और गोल होना तौहीद को चाहती है

तस्लीस (एक को तीन मानना)

हम इस समय असंख्य ख़ुदाओं का वर्णन छोड़ देते हैं, क्योंकि यह तो है ही एक बेहूदा और बेमानी आस्था और बेशुमार ख़ुदा मानने से शान्ति उठ जाती है, परन्तु हम तस्लीस वर्णन करते हैं। हमने जैसा कि प्रकृति के नज़ारों से प्रमाणित किया है कि ख़ुदा एक ही है। इस तरह पर यदि ख़ुदा (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) तीन होते जैसा कि ईसाई कहते हैं तो चाहिए था कि पानी,आग के शोले और ज़मीन आसमान के नक्षत्र सब के सब त्रिकोणीय होते ताकि तस्लीस पर गवाही होती। और न इन्सानी दिल का नूर कभी तस्लीस पर गवाही देता है। पादरियों से पूछा है कि जहां इंजील नहीं गई,वहां तस्लीस का सवाल होगा या तौहीद का, तो उन्होंने साफ़ स्वीकार किया है कि तौहीद का, बल्कि डाक्टर फ़ंडर ने अपनी पुस्तक में यह बात वर्णन की है। अब ऐसी खुली गवाही के होते फिर मैं नहीं समझ सकता कि तस्लीस की आस्था क्यों पेश कर दी जाती है। फिर यह त्रिकोणीय ख़ुदा भी अजीब हैं। हर एक के काम अलग अलग हैं। मानो हर एक ख़ुद अपने आप में त्रुटिपूर्ण और असम्पूर्ण है और एक दूसरे का परिपूर्क है।

मसीह की इलाह(उपास्य) होना

और मसीह जिसको ख़ुदा बनाया जाता है। उस का तो कुछ पूछो ही नहीं। सारी उम्र पकड़ धकड़ में गुज़री और इब्न-ए-आदम (आदम के पुत्र) को सिर धरने को स्थान ही ना मिला। आचरण का कोई सम्पूर्ण नमूना ही मौजूद नहीं। शिक्षा ऐसी अधूरी और असम्पूर्ण कि इस पर अनु-करण करके इन्सान बहुत नीचे जा गिरता है।

वह किसी दूसरे को सामर्थ्य

शेष पृष्ठ 12 पर

यूरोप के शोधकर्ताओं ने स्वीकार किया हैं कि यदि मुस्लमान अरब न होते तो आज दुनिया ज्ञान की इस मंज़िल पर न होती जहां अब है
और रूहानियत में जो अरबों ने तरक़्क़ी की उस की उदाहरण तो संसार के आरंभ होने से इस वक़्त तक और किसी क़ौम में पाई ही नहीं जाती

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः इब्राहीम आयत नम्बर 2 الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ اِلَيۡكَ لِتُخۡرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ۙ بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ اِلٰى صِرَاطِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَمِيۡدِ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में बताया है कि क़ुरआन-ए-करीम एक रोशनी है जिसके द्वारा से मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों को अंधेरे से रोशनी की तरफ़ निकाल ले जाऐंगे। फिर रोशनी की व्याख्या اِلٰى صِرَاطِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَمِيۡدِ से की। अर्थात अज़ीज़-ओ-हमीद ख़ुदा का रास्ता ही असल रोशनी है। हम देखते हैं रोशनी को तो हर एक पसंद करता है लेकिन रोशनी की व्याख्या में लोगों को मतभेद होता है। आज कल लोग कहते हैं ये नई रोशनी के आदमी हैं और अर्थात नया फ़लसफ़ा और तहज़ीब और इबाहत और अधर्म का आरम्भ होता है। कोई कहता है मसीहीयत ख़ुदा का नूर है। कोई हिंदू धर्म को कोई इस्लाम को ख़ुदा का नूर क़रार देता है। इस आयत में यह बताया गया है कि रस्म-ओ-रिवाज और पोस्त और छिलका ख़ुदा का नूर नहीं कहला सकता। नूर तो ख़ुदा तआला की तरफ़ जाने का नाम है। जिसका क़दम ख़ुदा तआला की तरफ़ नहीं

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-17)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

एक महिला प्रोफ़ैसर ने प्रश्न किया कि जर्मनी में आपकी कम्यूनिटी काफ़ी ACTIVE है। अब आपका आगे का क्या प्लान है

एक प्रश्न यह किया गया कि आप का पाकिस्तान वापस जाने का कोई इरादा और प्रोग्राम है आपके लोग देश प्रेमी हैं?

एक प्रोफ़ैसर ने यह प्रश्न किया कि आपकी महिलाए आज़ाद नहीं हैं। डांसिंग के प्रोग्रामों में नहीं जातीं। थेटर में जाने पर पाबंदी है

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

शेष रिपोर्ट

महिलाओं के जलसा गाह से

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

तशह्हुद, ताअव्वुज़ और सूरत फ़ातेहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

यहां जो शुरू में आयात तिलावत की गई हैं उस की पहली आयत ही हमें इस ओर ध्यान दिलाती है कि यदि तुम जो मोमिन कहलाते हो, जो मोमिन और मोमिना बनने का दावा करते अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ (सूर: अनफ़ाल : 21) हे लोगो! जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करो और इस इताअत से उन आदेशों से मुँह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो। तुम तक ये आदेश पहुंचाए जा रहे हैं। अल्लाह तआला और उस के रसूल की बातें तुम तक पहुंचाई जा रही हैं। यह इताअत का सबक़ और हुक्म तुम्हें क्यों दिया जा रहा है? इस लिए ताकि तुम जहां उन हालतों को सुधारने वाले बन सको वहां इसके कारण से तुम में इकाई पैदा हो और ज़ाती तौर पर भी और जमाअती तौर पर भी तुम्हें सफ़लता और सफ़लता नसीब हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह हम पर अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने अपने अहकामात को क़ुरआन-ए-करीम में नाज़िल फ़रमा कर फिर आज तक उन्हें महफ़ूज़ भी रखा हुआ है। और यह भी फ़र्मा दिया कि प्रत्येक ज़माने के लिए ये अहकामात हैं। फिर इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेज कर उन अहकामात को खोल कर हमारे लिए प्रदान करने के सामान भी पैदा फ़र्मा दिए और फिर ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ जोड़ कर हमें जहां अल्लाह तआला और उस के रसूल के अहकामात पर अनुकरण करने, उस की इताअत करने की ओर ध्यान दिलाने के सामान पैदा किए वहां यह भी फ़र्मा दिया कि इस इताअत के कारण से तुम हमेशा ख़िलाफ़त के इनाम से भी फ़ैज़याब होते रहोगे। तुम्हारी इकाई और ताक़त भी क़ायम रहेगी और अल्लाह तआला के फ़ज़लों को प्राप्त करते चले जाने वाले रहोगे। अत: यदि किसी का यह दावा है कि मैं जमाअत का मेम्बर हूँ ,जमाअत अहमदिया में शामिल हूँ और ख़िलाफ़त अहमदिया को मानती हूँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और महदी माहूद समझती हूँ तो अल्लाह तआला और उस के रसूल के अहकामात का कामिल जुआ अपनी गर्दन पर डालना होगा। पूर्ण इताअत के लिए अपने आपको प्रस्तुत करना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कोई अहमदी जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों से जान-बूझ कर बाहर निकलता है वह अहमदी ही नहीं है। कुछ ग़लतियाँ हो जाती हैं, कोताहियों हो जाती हैं, कमज़ोरियाँ पैदा हो जाती हैं, परन्तु यदि जान बूझ कर कोई इन अहकामात से बाहर निकले तो इस काअर्थ है कि वह अपने आप को इस निज़ाम से बाहर निकालने का प्रयास कर रहा है जो अल्लाह तआला ने क़ायम फ़रमाया है। इसी लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी शरायते बैअत में यह भी शर्त रखी है कि :

"रस्मों के अनुकरण और इच्छाओं के अनुसरण से बाज़ आ जाए गा और क़ुरआन शरीफ़ की हुकूमत को पूर्णता अपने सिर पर स्वीकार करेगा और ख़ुदा के आदेशों और रसूल के आदेशों को अपने हर एक राह में दस्तूरुल अमल क़रार देगा।"

अर्थात एक अहमदी रस्मो रिवाज के पीछे नहीं जाएगा। इच्छाओं, दुनिया की लालच और हवस और फ़ैशन, उनके पीछे नहीं जाएगा। ग़लत बातों के पीछे नहीं जाएगा और क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात जो हैं उन पर मुकम्मल तौर पर अनुकरण करने का प्रयास करेगा और जो अल्लाह तआला और उस के रसूल ने बताया है उस को उसूल बना कर उस पर अपन जीवन गुज़ारने का प्रयास करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: यह उन शरायत में से एक शर्त है जिस पर एक अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का दावा करता है। पुरुष हो या महिला यह दोनों के लिए है। यदि कोई अपने रस्मो रिवाज के पीछे चल रहा है और समाज के ग़लत तौर-तरीक़े उस को अपनी ओर खींच रहे हैं तो बैअत का हक़ अदा नहीं कर रहा। यदि संसार की प्राथमिकता और समाज का प्रभाव उसे दीन की बातों पर अनुकरण करने से रोक रहा है तो ये कमज़ोरी उसे बैअत के हक़ की अदायगी से दूर ले जा रही है। यदि क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात को कोई अनुकरण योग्य न होना क़रार देता है तो वह न ही बैअत का हक़ अदा कर रहा है, न ही इस्लाम में शुमार हो सकता है। यदि अल्लाह तआला और उस के रसूल की बातों पर अनुकरण नहीं तो अहमदी होने का दावा भी झूठ है। अहमदियत है ही अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक हुक्म और प्रत्येक कथन पर अनुकरण की जहाँ तक सम्भव हो प्रयास और पूर्ण इताअत का नाम, और जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला का हम पर यह एहसान है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान कर फिर ख़िलाफ़त के निज़ाम से जोड़ दिया जिस के माध्यम से लोग जमाअत को, मर्दों को औरतों को भी, जवानों को भी बूढ़ों को भी बार-बार अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत की ओर ध्यान दिलाया जाती है और इसी तरह निज़ाम-ए-जमाअत भी इस काम के लिए निर्धारित है और निज़ाम जमाअत अर्थात जो ओहदेदार निर्धारित हैं उनको ये काम करने चाहिऐं और तक़्वा पर चलते हुए करने चाहिऐं। यदि हम में से कोई इन बातों की ओर ध्यान नहीं देता जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के अहकामात की ओर ध्यान दिलाती हैं तो वह पुरुष हो या महिला अपने ईमान को ज़ाए कर रहा है। वह जमाअत की मजमूई ताक़त को नुक़्सान पहुंचा रहा है। वे संसार के सामने अपने अनुकरण और शिक्षा में अपवाद के कारण से, मतभेद के कारण से, ग़ैरों के सामने भी इस्लाम की ग़लत तस्वीर प्रस्तुत कर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: प्रत्येक अहमदी पुरुष और औरत की ज़िम्मेदारी है कि अपने जायज़े लें कि हम किस हद तक اَطِيْعُوا اللّٰهَ और اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ परअनुकरण करने का प्रयास कर रहे हैं। इस्लाम कोई ऐसा धर्म नहीं है जो ऐसे अहकामात देता हो जिन में हुक्म नहीं है या ऐसा हुक्म देता हो जिस से इन्सान को और समाज को लाभ न पहुंच रहा हो या अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें किसी ऐसी इताअत का हुक्म दे रहे हों जो केवल इन्सान को पाबंद करना चाहती अल्लाह तआला को हमारी किसी पाबंदी की आवश्यकता नहीं है बल्कि जो अहकाम हैं हमारे फ़ायदे के लिए हैं, हमारी जीवनों को संवारने के लिए हैं बल्कि यह इताअत जहां हमारे जीवनों को सँवारती है अल्लाह तआला की प्रसन्नता का कारण बनाते हुए सफ़लता पाने वाला बनाएगी। अल्लाह तआला एक जगह फ़रमाता है कि जो मोमिनीन अल्लाह तआला और उस के रसूल की ओर बुलाए जाने पर यह कहते हैं कि سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا कि हमने सुना और हमने मान लिया तो फ़रमाया कि اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ और वही लोग हैं जो सफ़ल हुआ करते हैं। सुन कर इताअत करने वाले लोग ही सफ़लता पाने वाले हैं। उन्हें खुशहाली भी अता होती है। वे सफ़लता भी प्राप्त करने वाले हैं। वे इन लाभदायक और नेक इच्छाओं को प्राप्त करने वाले हैं जिनकी वह इच्छा करते हैं या प्राप्त करना चाहते हैं। निश्चित एक मोमिन जो है इस की इच्छाएं हमेशा नेक ही हुआ करती हैं वह बुरी बातों की तो इच्छा नहीं कर सकता और फिर ख़ुशी और अच्छी हालतों के पाने वाले भी होते हैं। इन्ही लोगों को जो इताअत करते हैं ख़ुशीयां भी मिलती हैं और उनकी हालतें भी बेहतर होती हैं। वे अल्लाह

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"दुआ करें अल्लाह तआला वहां के लोगों को भी अमन और चैन और सुकून का जीवन गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मुख़ालिफ़ीन के हमलों और छल से अपने फ़ज़्ल से सुरक्षित रखें"आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे उसके क़तल से मना किया गया है जो इस शहादत (कलिमा) को पढ़ा करे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा फ़ारूक़-ए-आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बदर, ओहद और ख़ंदक़ के साथ समस्त ग़ज़वात में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल हुए

बारह मरहूमीन आदरणीय क़ुरैशी मुहम्मद फ़ज़लुल्लाह साहब नायब नाज़िर इशाअत क़ादियान, आदरणीय सय्यद बशीरुद्दीन अहमद साहब मुबल्लिग़ सिल्सिला क़ादियान, आदरणीय बिशारत अहमद साहब हैदर वाक़िफ-ए-ज़िंदगी क़ादियान (पुत्र फ़ैज़ अहमद साहब शहना), आदरणीय डाक्टर मुहम्मद अली ख़ान साहब (अमीर जमाअत अहमदिया ज़िला पिशावर), आदरणीय रफ़ी ख़ान शहज़ादा साहब (साबिक़ सदर मुहल्ला दारुल रहमत पूर्वी राजीकी रब्वाह), आदरणीय अय्याज़ यूनुस साहब आस्ट्रेलिया, आदरणीय मियां ताहिर अहमद साहब (साबिक़ कारकुन वकालत माल सालिस रब्वाह), आदरणीय रफ़ीक़ आफ़ताब साहब यू.के,आदरणीया ज़रीना अख़तर साहबा (पत्नी मिर्ज़ा नसीर अहमद साहब चिट्ठी मसीह उस्ताद जामिआ अहमदिया यू.के), आदरणीय हाफ़िज़ मुहम्मद अकरम साहब,आदरणीय चौधरी नूर अहमद नासिर साहब,आदरणीय महमूद अहमद मिन्हास साहब (पुत्र हकीम अबैदुल्लाह साहब) का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 मई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा था। रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिन ग़ज़वात और सराया (युद्धों) में शिरकत की इस के बारे में आज कुछ वर्णन करता हूँ। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बदर,ओहद और ख़ंदक़ के साथ समस्त ग़ज़वात में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ शामिल हुए। इसके इलावा असंख्य युद्धों में भी शामिल हुए जिनमें से कुछ युद्ध के आप रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर भी थे। (अल् तब्कतुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 206 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

ग़ज़्व-ए-बदर के लिए रवानगी के समय सहाबा के ऊंटों की संख्या जो उनके पास थे सत्तर थी। इसलिए एक-एक ऊंट तीन-तीन आदमियों के लिए निर्धारित करने पडे और हर एक बारी-बारी सवार होता था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऊंट पर बारी-बारी सवार होते थे।

(सीरतुल-हल्बिया बाब باب ذكر مغازيه ﷺ भाग 2 पृष्ठ 204 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बदर के लिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रवानगी फ़रमाई तो इस के वर्णन में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबू सुफ्यान के क़ाफ़िला की रोक-थाम के लिए मदीना से निकले जो शाम की ओर से आ रहा था। जब मुस्लमानों का क़ाफ़िला ज़िफरान पहुंचा, यह मदीना के नवाह में वादी सुफ़रा के निकट एक वादी है, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़बर मिली कि क़ुरैश अपने तिजारती क़ाफ़िले को बचाने के लिए निकल पड़े हैं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्वरा माँगा और उनको यह ख़बर दी कि मक्का से एक लश्कर अत्यधिक तेज़ रफ़्तारी से निकल पड़ा है। इस बारे में तुम क्या कहते हो? क्या लश्कर के मुक़ाबला में तिजारती क़ाफ़िला तुम को ज़्यादा पसंद है? उन्होंने कहा हाँ। अर्थात एक गिरोह ने कहा हम दुश्मन के मुक़ाबले में तिजारती क़ाफ़िले को ज़्यादा पसंद करते हैं। एक रिवायत में वर्णन मिलता है कि एक गिरोह ने कहा कि यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हम से जंग का वर्णन करते तो हम उस की तैयारी कर लेते। हम तो तिजारती क़ाफ़िले के लिए निकले हैं। एक रिवायत में आता है कि उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तिजारती क़ाफ़िले की तरफ़ ही जाना चाहिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुश्मन को छोड़ दें। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख का रंग बदल गया। हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि इस आयत के नुज़ूल का कारण भी यही घटना है कि مَاۤ اَخۡرَجَكَ رَبُّكَ مِنۡۢ بَيۡتِكَ بِالۡحَقِّ وَ اِنَّ فَرِيۡقًا مِّنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ لَكٰرِهُوۡنَ (अल् अंफ़ाल : 6) कि जैसे तेरे रब ने तुझे हक़ के साथ तेरे घर से निकाला था हालाँकि मोमिनों में से एक गिरोह उसे नि:संदेह नापसंद करता था। उस वक़्त हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और बात की और बहुत अच्छी बात की। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और बात की और बहुत अच्छी बात की। फिर मिक्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिसका अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया है उस की तरफ़ चलीए। हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हैं। अल्लाह की क़सम! हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह नहीं कहेंगे जैसा कि बनीइसराईल ने मूसा से कहा था कि فَاذۡهَبۡ اَنۡتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوۡنَ (अल् मायद: 25) अत: जा तू और तेरा रब दोनों लड़ो हम तो यहीं बैठे रहेंगे। उन्होंने कहा नहीं बल्कि हम लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ लड़ेंगे जब तक कि हम में जान है। (सीरतुल हल्बिया, बाब वर्णन माज़िया, भाग 2 पृष्ठ 205 - 206 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 125)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब उन्होंने क़ैदियों को पकड़ा अर्थात बदर के अवसर पर मुस्लमानों ने क़ैदियों को पकड़ा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया इन क़ैदियों के बारे में तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वे हमारे चचाज़ाद और रिश्तेदार हैं। मेरा ख़्याल है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे फ़िद्या ले लें। वे हमारे लिए इन कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में क़ुव्वत का बाइस होगा और सम्भव है कि अल्लाह तआला उनकी इस्लाम की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे इब्ने ख़त्ताब तुम्हारी क्या राय है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं हे रसूले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह की क़सम

मेरी वह राय नहीं है जो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय है, बल्कि मेरी राय यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इन्हें हमारे सपुर्द कर दें। हम उनकी गर्दनें मार दें और अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द अक़ील को करें कि वह उस की गर्दन मारे और मेरे सपुर्द अमुक को करें जो रिश्ते में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का रिश्तेदार था तो में उस की गर्दन मार दूं क्योंकि ये सब कुफ़्फ़ार के लीडर और उनके सरदार हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बात को प्राथमिकता दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेरी बात को महत्त्व नहीं दिया। अगले दिन मैं आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे रो रहे थे। मैं ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे बताएं किस चीज़ ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथी को रुलाया है। यदि मुझे रोना आया तो मैं भी रोऊँगा अन्यथा मैं आप दोनों के रोने की तरह रोने की सूरत बनाऊँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया: मेरे रोने की वजह यह है जो तुम्हारे साथियों ने मेरे सामने उनसे फ़िद्या लेने की तजवीज़ पेश की थी। मेरे सामने उनका अज़ाब उस दरख़्त से ज़्यादा निकट पेश किया गया है जो दरख़्त अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकट ही था और अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنۡ يَّكُوۡنَ لَهٗۤ اَسۡرٰى حَتّٰى يُثۡخِنَ فِى الۡاَرۡضِ (अल् अंफ़ाल : 68) अर्थात किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में रक्त बहाने वाली जंग के बग़ैर क़ैदी बनाए और फिर अगली दो आयतें छोड़ कर है कि فَكُلُوۡا مِمَّا غَنِمۡتُمۡ حَلٰلًا طَيِّبًا(अल् अंफ़ाल : 70) अर्थात अत: जो माल-ए-ग़नीमत तुम हासिल करो उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ। अत: अल्लाह ने उनके लिए ग़नीमतें जायज़ कर दीं। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताब الجهاد والسير باب الْإِمْدَادِ بِالْمَلَائِكَةِ हदीस 4588)

इस हदीस के शुरू के शब्द जो हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रो रहे थे और फिर आगे जो क़ुरआन की आयात के शब्द हैं उनमें जो मज़मून वर्णन हुआ है वह इस रिवायत को अस्पष्ट सा कर देता है। स्पष्ट नहीं करता, बात स्पष्ट नहीं होती। बहरहाल इस रिवायत को सही समझ के अक्सर इतिहास की पुस्तकें में और जीवनी और व्याख्या करने वालों ने वर्णन किया है कि अल्लाह तआला ने जैसे बदर के युद्ध के क़ैदियों से फ़िद्या लेने वाले फ़ैसले पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को पसंद फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की जीवनी लिखने वाले जब एक अलग बाब बाँधते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय पर कौन-कौन से क़ुरआन के आदेश नाज़िल हुए तो उनमें से एक यह भी दर्ज किया जाता है कि बदर के युद्ध के क़ैदियों के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को अल्लाह तआला ने महत्तव दिया, लेकिन यह अस्पष्ट है। जैसा कि मैं ने कहा स्पष्ट नहीं होता बल्कि लगता है कि जीवनी के लेखकों ने और मुफ़स्सिरीन को इस को समझने में ग़लती लगी है। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको जो वर्णन फ़रमाया है तो रज़ियल्लाहु अन्हु के जो प्रकाशित न होने वाले तफ़सीरी नोटिस में से एक नोट मिला है जो इन रवायात का खण्डन करता है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की जो यह वज़ाहत है वही सही लगती है। बिला वजह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाम को ऊंचा करने के लिए लगता है कि उन्होंने यह रिवायत बना दी या उस को ग़लत समझा गया। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर: अंफ़ाल की आयत अड़सठ (68) की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि इस्लाम से पहले अरब में रिवाज था और लिखते हैं कि अफ़सोस है कि दुनिया के कुछ हिस्सों में अब तक यह चला आता है कि यदि जंग न भी हो और लड़ाई न भी हो तब भी क़ैदी पकड़ लेते हैं और उनको ग़ुलाम बना लेते हैं। यह आयत इस बुरी रस्म का खंडन करती है और साफ़-साफ़ शब्द में हुक्म देती है कि केवल जंग की हालत में और लड़ाई के बाद ही दुश्मन के आदमी क़ैदी बनाए जा सकते हैं। यदि लड़ाई न हो रही हो तो किसी आदमी को क़ैदी बनाना जायज़ नहीं। इस आयत की बड़ी ग़लत तफ़सीर की गई है। कहते हैं कि जब मुस्लमानों ने बदर के युद्ध के अवसर पर मक्का वालों के कुछ क़ैदी पकड़ लिए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साहाब रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्वरा किया कि उनके विषय में क्या फ़ैसला करना चाहिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय थी कि उनको क़तल कर देना चाहिए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय थी कि फ़िद्या लेकर छोड़ देना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को पसंद फ़रमाया और यह सूर: अंफ़ाल की 68 आयत है जिसमें यह है कि किसी नबी के लिए जायज़ नहीं कि ज़मीन में रक्त बहाने वाली जंग करे।

बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसी की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं कि जो राय ली गई थी इस में तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय अलग थी, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय अलग थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को पसंद फ़रमाया और फ़िद्या लेकर क़ैदियों को छोड़ दिया। (मुफ़स्सेरीन) कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो जैसे ख़ुदा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कार्य को नापसंद फ़रमाया। क़ैदियों को क़तल कर देना चाहिए था और फ़िद्या नहीं लेना चाहिए था। यह तिबरी की तफ़सीर में है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं परन्तु यह तफ़सीर ग़लत है। प्रथम उस वक़्त तक ख़ुदा ने कोई ऐसा हुक्म नाज़िल नहीं किया था कि क़ैदियों को फ़िद्या लेकर न छोड़ा जाए। इसलिए फ़िद्या क़बूल करने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कोई इल्ज़ाम नहीं आ सकता था। द्वितीय इस से पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नख़ला के स्थान पर दो आदमियों से फ़िद्या लेकर उनको छोड़ दिया था और ख़ुदा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस फ़ेअल को नापसंद नहीं फ़रमाया था। तृतीय केवल दो आयतें और आगे चल कर ख़ुदा मुस्लमानों को आज्ञा देता है कि माल-ए-ग़नीमत से जो कुछ तुम को मिले उस को खाओ वे हलाल और पवित्र है। यह बात किसी की सोच में भी नहीं आ सकती कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़िद्या लेने को ख़ुदा नापसंद करे और इस तरह जो रुपया हासिल हो उस को हलाल और पवित्र फ़रमाए इसलिए यह तफ़सीर ही ग़लत है और सही तफ़सीर यही है कि इस आयत में एक आम उसूल निर्धारित फ़र्मा दिया है कि क़ैदी उसी सूरत में पकड़े जा सकते हैं कि बाक़ायदा जंग हो और दुश्मन को घातक चोटें लगा कर पराजित कर दिया गया हो।

(उद्धरित दर्स हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु (अप्रकाशित) सूरत अल् अंफ़ाल, रजिस्टर नंबर 36 पृष्ठ 968-969)

मुफ़स्सिरीन क़ुरआन में से अल्लामा इमाम राज़ी और प्रसिद्ध जीवनी लेखक अल्लामा शिबली नुमानी का भी यही कथन है जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया है।

(तफ़सीर कबीर अल्लामा इमाम राज़ी, भाग 8 भाग 15 पृष्ठ 158 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.) (सीरतुल नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, शिबली नुमानी, भाग अव्वल, पृष्ठ 194 प्रकाशन आर जैड पैकेजज़ लाहौर 1408 हिज्री)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि "मदीना पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ैदियों के विषय में मश्वरा किया कि उनके विषय में क्या करना चाहीए। अरब में साधारणतया क़ैदियों को क़तल कर देने या मुस्तक़िल तौर पर ग़ुलाम बना लेने का रिवाज था परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबीयत पर यह बात सख़्त कष्टदायक गुज़रती थी और फिर अभी तक इस बारह में कोई इलाही आदेश भी नाज़िल नहीं हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि मेरी राय में तो उनको फ़िद्या लेकर छोड़ देना चाहीए क्योंकि आख़िर ये लोग अपने ही भाई हैं और क्या ताज्जुब कि कल को इन्ही में से फ़िदा देने वाला इस्लाम में शामिल हो जाएं परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस राय से अलग और कहा कि धर्म के मुआमला में रिश्तेदारी का कोई ख्याल नहीं होना चाहीए और ये लोग अपने कर्मों से क़तल के अधिकारी हो चुके हैं। अत: मेरी राय में इन सबको क़तल कर देना चाहीए बल्कि हुक्म दिया जाए कि मुस्लमान ख़ुद अपने हाथ से अपने अपने रिश्तेदारों को क़तल करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने फ़ित्री रहम से प्रभावित हो कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को पसंद फ़रमाया और क़तल के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया और हुक्म दिया कि जो मुशरिकीन अपना फ़िद्या इत्यादि अदा कर दें उन्हें छोड़ दिया जाए। इसलिए बाद में इसी के अनुसार इलाही हुक्म हुआ। "जब इलाही हुक्म भी फ़िद्या देने के बारे में नाज़िल

हो गया जैसा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी लिखा है तो फिर उस हदीस को बुनियाद बना कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के रोने का कारण पैदा करना तो अजीब सी बात लगती है। बहरहाल हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं "इसलिए हर व्यक्ति के मुनासिब-ए-हाल एक हज़ार दिरहम से लेकर चार हज़ार दिरहम तक उस का फ़िद्या निर्धारित कर दिया गया इस तरह सारे क़ैदी रिहा होते गए।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 367-368)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शादी के बारे में जो वर्णन मिलता है कि हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पति बदर के युद्ध में शामिल हुए और जंग से वापसी पर बीमार हो कर देहांत कर गए तो बाद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ शादी की। इस की तफ़सील बुख़ारी में इस प्रकार वर्णित है कि हज़रत अबदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि जब हज़रत हफ़सा पुत्री उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुन्नेस बिन हुज़ाफा सहमी से विधवा हुईं और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे जो बदर में शामिल थे। मदीना में उन्होंने वफ़ात पाई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : मैं हज़रत उसमान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला उनके पास हफ़सा का वर्णन किया और कहा कि यदि आप चाहें तो हफ़सा पुत्री उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दूं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैं अपने इस मुआमले पर ग़ौर करूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं इसलिए मैं कई रोज़ तक ठहरा रहा। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ दिनों के बाद कहा कि मुझे यही मुनासिब मालूम हुआ है कि में इन दिनों शादी न करूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे। फिर मैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु चाहें तो मैं हफ़सा पुत्री उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दूं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ामोश हो गए और मुझे कुछ उत्तर न दिया। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की निसबत मैं ने उनसे ज़्यादा महसूस किया अर्थात एहसास ज़्यादा हुआ कि उन्होंने भी इन्कार कर दिया है। फिर मैं कुछ दिन ठहरा रहा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह का पैग़ाम भेजा और मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उनका निकाह कर दिया। जब निकाह हो गया तो फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मुझ से मिले और कहा जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का वर्णन किया था और मैं ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को कोई उत्तर नहीं दिया तो शायद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझ से मेरे न करने पर, इन्कार करने पर कुछ महसूस किया था। मैं ने कहा जी हाँ मैं ने महसूस किया था तो उन्होंने कहा कि दरअसल जो बात आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने पेश की थी उस की निसबत आप रज़ियल्लाहु अन्हु को उत्तर देने से मुझे नहीं रोका था परन्तु इस बात ने कि मुझे इलम हो चुका था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का वर्णन किया था और मैं ऐसा नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह राज़ ज़ाहिर करता। अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह इलम था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिश्ता का इज़हार किया था। तो कहते हैं यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का राज़ था मैं इस को ज़ाहिर नहीं कर सकता था और यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इसे तर्क कर देते तो मैं ज़रूर तुम्हारे इस रिते को क़बूल कर लेता।

(सही अल् बुख़ारी, किताब मग़ाज़िया, हदीस नंबर 4005)

यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया। इस घटना की कुछ तफ़सील सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में भी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखी है। कहते हैं कि "हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक साहबज़ादी थीं जिनका नाम हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा था। वह ख़ुन्नेस बिन हुज़ाफा रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी थीं जो एक मुख़लिस सहाबी थे और बदर के युद्ध में शामिल हुए थे। बदर के बाद मदीना वापिस आने पर ख़ुन्नेस बीमार हो गए और इस बीमारी से ठीक नहीं हो सके। उनकी वफ़ात के कुछ समय बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हफ़सा के दूसरे निकाह की चिंता हुई। उस वक़्त हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की उमर बीस वर्ष से ऊपर थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी फ़ित्रती सादगी में स्वयं उसमान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से मिल कर उनसे वर्णन किया कि मेरी लड़की हफ़सा अब विधवा है आप यदि पसंद करें तो उसके साथ शादी कर लें परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने टाल दिया। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णन किया लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी ख़ामोशी इख़तियार की और कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत दुख हुआ और उन्हों ने इसी कष्ट की हालत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सारी बातें प्रस्ततु कर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। उमर कुछ फ़िक्र न करो। ख़ुदा को मंज़ूर हुआ तो हफ़सा को उसमान और अबू बकर की निसबत बेहतर पति मिल जाएगा और उसमान को हफ़सा की निसबत बेहतर पत्नी मिलेगी। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस लिए फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हफ़सा के साथ शादी कर लेने और अपनी लड़की उम्मे कुलसूम को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ ब्याह कर देने का इरादा कर चुके थे जिस की हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों को सूचना थी और इसी लिए उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तजवीज़ को टाल दिया था। इसके कुछ समय बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से अपनी साहबज़ादी उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी फ़र्मा दी ... और इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपनी तरफ़ से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हफ़सा के लिए पैग़ाम भेजा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस से बढ़ कर और क्या चाहीए था। उन्होंने निहायत ख़ुशी से इस रिश्ते को क़बूल किया और शाबान तीन हिज्री में हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकाह में आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों में शामिल हो गईं। जब यह रिश्ता हो गया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि शायद आपके दिल में मेरी तरफ़ से कोई शिकायत हो। बात यह है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरादे की सूचना थी लेकिन मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इजाज़त के बग़ैर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के राज़ को ज़ाहिर नहीं कर सकता था। हाँ यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह इरादा न होता तो मैं बड़ी ख़ुशी से हफ़सा से शादी कर लेता।

हफ्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह में एक तो यह ख़ास उद्देश्य था कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी थीं जो मानों हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद समस्त सहाबा में अफ़ज़ल तरीन समझे जाते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विशेष लोगों में से थे। अत: आपस के ताल्लुक़ात को ज़्यादा मज़बूत करने और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हफ़सा के इस सदमा को दूर करने के वास्ते जो ख़ुन्नेस बिन हुज़ाफा सहमी रज़ियल्लाहु अन्हु की असमय मौत से उनको पहुंचा था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुनासिब समझा कि हफ़सा से स्वयं शादी फ़र्मा लें और दूसर आम उद्देश्य यह सामने था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जितनी ज़्यादा पत्नियाँ होंगी उतना ही औरतों में जो लोगों का आधा हिस्सा बल्कि कई प्रकार से आधा से बेहतर हिस्सा हैं इस्लाम का सन्देश देने और तालीम-ओ-तर्बीयत का काम ज़्यादा बड़े रूप पर और ज़्यादा आसानी से और ज़्यादा ख़ूबी के साथ हो सकेगा।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 477-478)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से ग़ज़व-ए-ओहद के बारे में लिखा है। ग़ज़व-ए-ओहद के अवसर पर जब ख़ालिद बिन वलीद ने मुस्लमानों पर हमला किया तो मुस्लमान इस अचानक हमले से सँभल न सके। इसकी तफ़सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस प्रकार लिखी है कि क़ुरैश के लश्कर ने करीब- करीब चारों तरफ़ घेरा डाल रखा था और अपने एक के बाद एक हमलों से हर समय दबाता चला आता था। इस पर भी मुस्लमान शायद थोड़ी देर बाद सँभल जाते परन्तु ग़ज़ब यह हुआ कि क़ुरैश के एक बहादुर

सिपाही अबदुल्लाह बिन कमा ने मुस्लमानों के अलमबरदार मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया जिन्हों ने झंडा उठाया हुआ था और अपनी तलवार के वार से उनका दायाँ बाज़ू काट गिराया। मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु तुरन्त दूसरे हाथ में झंडा थाम लिया और क़ामा के पुत्र के मुक़ाबला के लिए आगे बढ़े परन्तु उसने दूसरे वार में उनका दूसरा हाथ भी काट दिया। इस पर मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने दोनों कटे हुए हाथों को जोड़ कर गिरते हुए इस्लामी झंडे को सँभालने की कोशिश की और उसे छाती से चिमटा लिया जिस पर क़ामा के पुत्र ने उन पर तीसरा वार किया और अब की दफ़ा मसअब शहीद हो कर गिर गए। झंडा तो किसी दूसरे मुस्लमान ने तुरन्त आगे बढ़ कर थाम लिया परन्तु चूँकि मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु शरीर का आकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलता था क़ामा के पुत्र ने समझा कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मार लिया है। या यह भी सम्भव है कि उस की तरफ़ से यह परामर्श केवल शरारत और धोखा देने के ख़्याल से हो। बहर हाल उसने मसअब रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीद हो कर गिरने पर शोर मचा दिया कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मार लिया है। इस ख़बर से मुस्लमानों के रहे सहे होसले भी जाते रहे और उनकी एकता बिल्कुल बिखर गई। बहुत से सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो परेशान हो कर मैदान से भाग निकले। उस वक़्त मुस्लमान तीन हिस्सों में बट गए थे। एक गिरोह वह था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर मैदान से भाग गया था परन्तु यह गिरोह सबसे थोड़ा था। लेकिन जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन आता है उस वक़्त के ख़ास हालात और उन लोगों के दिल के ईमान और इख़लास को देखते हुहे अल्लाह तआला ने उन्हें माफ़ फ़र्मा दिया। दूसरा गिरोह जो था इस गिरोह में वे लोग थे जो भागे तो नहीं थे परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुनकर या तो हिम्मत हार बैठे थे और या अब लड़ने को बेकार समझते थे और इस लिए मैदान से एक तरफ़ हट कर सिर झुका कर बैठ गए थे और तीसरा गिरोह वह था जो बराबर लड़ रहा था। उनमें से कुछ तो वे लोग थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्दगिर्द जमा थे और अद्वितीय जाँनिसारी की प्रतिभा दिखा रहे थे और अक्सर वे थे जो जंग के मैदान में बिखरे हुए लड़ रहे थे। इन लोगों और तथा दुसरे गिरोह के लोगों को जिस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवित मौजूद होने का पता लगता जाता था ये लोग दीवानों की तरह लड़ते भिड़ते आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्दगिर्द जमा होते जाते थे।

बहरहाल उस वक़्त निहायत ख़तरनाक लड़ाई हो रही थी और मुस्लमानों के वास्ते एक सख़्त इबतिला और परीक्षा का समय था और जैसा वर्णन हो चुका है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर बहुत से सहाबा हिम्मत हार चुके थे और हथियार फेंक कर मैदान से एक तरफ़ हो गए थे। इन्ही में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे जो मायूस हो कर एक तरफ़ हो कर बैठ गए थे। इसलिए ये लोग इसी तरह मैदान-ए-जंग के एक तरफ़ बैठे थे कि ऊपर से एक सहाबी अनस बिन नज़र अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए और उनको देखकर कहने लगे कि तुम लोग यहां क्या करते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शहादत पाई। अब लड़ने से क्या हासिल होगा? अन्स ने कहा कि यही लड़ने का समय है ताकि जो मृत्यु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पाई वह हमें भी नसीब हो और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद ज़िंदगी का भी क्या करना है! और फिर उनके सामने साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उन्होंने अर्थात हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि साद रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे तो पहाड़ी से जन्नत की ख़ुशबू आ रही है। यह कह कर अन्स रज़ियल्लाहु अन्हु दुश्मन की सफ़ में घुस गए और लड़ते-लड़ते शहीद हुए और जंग के बाद देखा गया तो उनके बदन पर अस्सी से ज़्यादा घाव थे और कोई पहचान नहीं सकता था कि यह किस की लाश है। आख़िर उनकी बहन ने उनकी उंगली देख कर पहचान की।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम,पृष्ठ 493 से 495)

ओहद के समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने कुछ सहाबा के साथ पहाड़ की घाटी पर पहुंचे ही थे कि कुफ़्फ़ार के एक गिरोह ने घाटी पर हमला किया। उनमें ख़ालिद बिन वलीद भी थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस वक़्त दुआ की कि اَللّٰهُمَّ إِنَّهُ لَا يَنْبَغِيْ لَهُمْ أَنْ يَّعْلُوْنَا हे अल्लाह ये लोग हमारे पास न पहुंच सकें। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ मुहाजिरीन के साथ इन मुशरिकीन का मुक़ाबला किया और मारते-मारते उनको भगा दिया।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 537 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2001)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि अबू सुफ्यान अपने कुछ साथियों को साथ लेकर इस घाटी की तरफ़ बढ़ा जहां मुस्लमान जमा थे और इस के निकट खड़े हो कर पुकार कर बोला कि मुसलमानो क्या तुम में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। कोई उत्तर न दे। इसलिए सब सहाबा ख़ामोश रहे। फिर उसने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का पूछा परन्तु इस पर भी आपके इरशाद के अधीन किसी ने उत्तर नहीं दिया। जिस पर उसने बुलंद आवाज़ से घमण्ड में कहा कि ये सब लोग मारे गए हैं क्योंकि यदि वे जीवित होते तो उत्तर देते। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से न रहा गया और वह बे-इख़्तियार हो कर बोले। हे अल्लाह के शत्रु ! तू झूठ कहता है। हम सब ज़िंदा हैं और ख़ुदा हमारे हाथों से तुम्हें ज़लील करेगा। अबू सुफ्यान ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ पहचान कर कहा कि उमर सच सच बताओ क्या मुहम्मद ज़िंदा है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हाँ हाँ ख़ुदा के फ़ज़ल से वह ज़िंदा हैं और तुम्हारी ये बातें सुन रहे हैं। अबू सुफ्यान ने किसी क़दर धीमी आवाज़ में कहा। तो फिर इब्न-ए-कमिया ने झूठ कहा है क्योंकि मैं तुम्हें इस से ज़्यादा सच्चा समझता हूँ। इस के बाद अबू सुफ्यान ने निहायत बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा। اُعْلُ هُبَلْ अर्थात हे हुब्ल तेरी शान बुलंद हो। सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद का ख़्याल कर के ख़ामोश रहे परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो अपने नाम पर तो ख़ामोश रहने का हुक्म देते थे अब ख़ुदा तआला के मुक़ाबला में बुत का नाम आने पर ब्याकुल हो गए और फ़रमाया कि तुम उत्तर क्यों नहीं देते? सहाबा ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! क्या उत्तर दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَ اَجَلّ अर्थात बुलंदी और बुज़ुर्गी केवल अल्लाह तआला को हासिल है। अबू सुफ्यान ने कहा لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ। हमारे साथ उज़्ज़ा है और तुम्हारे साथ उज़्ज़ा नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कहो اَللّٰهُ مَوْلَنَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ उज़्ज़ा क्या चीज़ है। हमारे साथ अल्लाह हमारा मददगार है और तुम्हारे साथ कोई मददगार नहीं। इसके बाद अबू सुफ्यान ने कहा कि लड़ाई एक डोल की तरह होती है जो कभी चढ़ता और कभी गिरता है। अत: यह दिन बदर के दिन का बदला समझो और तुम मैदान-ए-जंग में ऐसी लाशें पाओगे जिनके साथ नाक कान काटा गया है। मैं ने इस का हुक्म नहीं दिया परन्तु जब मुझे उस का इलम हुआ तो मुझे अपने आदमियों का यह कार्य कुछ बुरा भी नहीं लगा। और हमारे और तुम्हारे मध्य अगले वर्ष फिर इन दिनों में बदर के स्थान पर फिर जंग का वादा रहा। एक सहाबी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायत के अधीन उत्तर दिया कि बहुत अच्छा यह वादा रहा। बहरहाल यह कह कर अबू सुफ्यान अपने साथियों को लेकर नीचे उतर गया और फिर क़ुरैश का लश्कर मक्का की तरफ़ रवाना हुआ।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए, पृष्ठ 498-499)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़वा-ए-ओहद के बाद मदीना पहुंचे तो मुनाफ़क़ीन और यहूद खुशियां मनाने लगे और मुस्लमानों को बुरा-भला कहने लगे और कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बादशाहत की इच्छा रखते हैं और आज तक किसी नबी ने इतना नुक़्सान नहीं उठाया जितना उन्होंने उठाया। ख़ुद भी घायल हुए और उनके अस्हाब भी घायल हुए। और कहते थे कि यदि तुम्हारे वे लोग जो क़तल हुए हमारे साथ रहते तो कभी क़तल न होते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उन मुनाफ़क़ीन के क़तल की इजाज़त चाही जो इस तरह ये बातें कर रहे हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क्या वे इस की गवाही नहीं देते कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ। कलिमा तो पढ़ते हैं नाँ ये लोग। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया क्यों नहीं। ये तो कहते हैं लेकिन साथ मुनाफ़िक़ाना बातें भी कर रहे हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा लेकिन ये तलवार के ख़ौफ़ से इस तरह

कहते हैं। अत: उनका मुआमला ज़ाहिर हो गया है। अब जब उनके दिल की बातें निकल गई हैं और अल्लाह ने उनके उपद्रव को ज़ाहिर कर दिया है तो फिर उनसे इंतिक़ाम लेना चाहिए। उनको सज़ा देनी चाहीए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे उस के क़तल से मना किया गया है जो इस शहादत का इज़हार करे।

(सीरतुल हल्बिया,باب ذکر مغازیه غزوه احد, भाग 2 पृष्ठ 348 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2002)

जिस ने यह कलिमा पढ़ लिया मुझे ऐसे व्यक्ति के क़तल से मना किया गया है। यह वर्णन इन शा अल्लाह आगे चलेगा। कुछ मरहूमीन का अब मैं ने वर्णन करना है। इसलिए यहां ख़त्म करता हूँ।

लेकिन इस से पहले मैं दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ। पिछले हफ़्ता भी मैंने कहा था। मज़लूम फ़लस्तीनियों के लिए दुआ करें। जबकि जंग बंदी हो गई है लेकिन तारीख़ हमें यही बताती है कि कुछ समय के बाद कहीं न कहीं से, किसी न किसी तरीक़े से, किसी न किसी बहाने से दुश्मन उन फ़लस्तीनियों को ज़ुलम का निशाना बनाते रहते हैं और कोई न कोई वजह बनती जाती है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और फ़लस्तीनियों के लिए भी हक़ीक़ी आज़ादी हासिल हो। अल्लाह तआला उनको ऐसे लीडर भी अता फ़रमाए जिनमें अक़्ल और विवेक भी हो और मज़बूती भी हो, जो अपनी बात को कहने और अपने हक़ लेने वाले भी हों। इसी तरह अहमदियों के लिए जो विशेषता पाकिस्तान में अत्याचार का निशाना बन रहे हैं उन के लिए बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें भी अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

जनाज़ों में से आज जिनका पहला वर्णन है वह क़ुरैशी मुहम्मद फ़ज़लुल्लाह साहब नायब नाज़िर इशाअत क़ादियान थे जो 27 अप्रैल को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी माता के दादा और पिता के नाना हज़रत मुंशी मेहर दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे जिनके ज़रीया से उनके ख़ानदान में अहमदियत आई और उनके नाम मिनारतुल मसीह के चंदा देने वालों में भी दर्ज है।

जामिआ से फ़राग़त के बाद क़ुरैशी साहब ने तेईस वर्ष पाँच माह जामिआ अहमदिया में तदरीस का काम किया और क़ुरआन-ए-मजीद, उर्दू, कलाम, सिर्फ़-ओ-नहव (व्याकरण) और अदब अरबी (अरबी साहित्य) इत्यादि के विषय पढ़ाए और कुल सेवा का समय उनका सैंतीस वर्ष सात माह बनता है। अल्लाह के फ़ज़ल से मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी और एक बेटा और दो बेटियां हैं।

उनके बारे में नाज़िर इशाअत मख़दूम साहब लिखते हैं कि जामिआ में जब थे बहुत प्रिय उस्ताद थे। विद्यार्थियों के साथ बहुत मुहब्बत और दोस्ती का सुलूक था और दोस्ताना था और निहायत ईमानदारी से और वक़्फ़ की रूह के साथ काम किया। हमेशा वक़्त की पाबंदी की। विद्यार्थियों से भी वक़्त की पाबंदी करवाते थे। हिंदुस्तान के अक्सर मुबल्लिग उनके शागिर्द हैं और उनसे उन्होंने लाभ प्राप्त किया। और स्वभाव में उनकी बहुत सादगी थी। बातें संक्षेप में करते थे, ज़्यादा बातें नहीं करते थे लेकिन उनकी बात बड़ी इल्मी और ठोस होती थी। नायब सदर ख़ुद्दाम अहमदिया भारत के तौर पर उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। चौंतीस वर्ष का लम्बे समय तक आपने बतौर नायब ऐडीटर अख़बार बदर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। ऐडीटर मिशकात भी रहे। तारीख़ अहमदियत भारत की कमेटी के भी मैंबर थे। रुहानी ख़ज़ायन का जो कंप्यूटराईज़ड ऐडीशन छपा था इस में उन्होंने प्रफ़ू रीडिंग की कुछ ग़लतियाँ निकालीं। इसके बाद फिर उनके कहने पर उनकी दुरुस्तीयाँ की गईं। बड़ी सूक्ष्मदर्शता से हर चीज़ देखा करते थे। प्रूफ़ रीडिंग करते थे। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ पुस्तकें जो अलग अलग प्रकाशित हुई हैं उनकी मुकम्मल प्रफ़ू रीडिंग की विशेषता बराहीन-ए-अहमदिया और आर्य धर्म और सत-वचन इत्यादि। और उन पुस्तकें में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से दिए गए जो हवाला-जात (संदर्भ) थे उनके असल स्रोत और ग्रंथों और वेदों से अत्यधिक बारीकी से चैक करते हुए एक-एक शब्द के उच्चारण और अनुवाद में जो अंतर नज़र आता था उस की निशानदेही करते थे। उनकी विशेषता थी हर मुआमले में अपनी तहक़ीक़ को उच्च सीमा तक पहुंचाते। उन्होंने आर्य धर्म और सत वचन के हवालाजात की तलाश और निरीक्षण और चैकिंग बड़ी मेहनत से की। यह कहा करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस किताब को हिन्दुओं और सिक्खों के लिए प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है और पुस्तकें इन दोनों धर्म के मुक़ाबले पर बहुत महत्तव रखती हैं। इसलिए बड़ी बारीकी से उनको चैक करना होगा और हवाले ठीक करने होंगे।

क़ुरआन-ए-करीम जो प्रकाशित हुआ है अब हमारी तरफ़ से "ख़-ए- मंज़ूर" में इस के सॉफ्टवेअर की तैयारी में भी उनकी बहुत ख़िदमात हैं। यह बंबई की कंपनी से बनवाया गया था और इस में उन्होंने बहुत काम किया है। दिन रात उन्होंने उस की इस्लाह और इस की दरूस्तगी और मायार के लिए काम किया। "ख़त-ए-मंज़ूर" में सादा क़ुरआन-ए-करीम तो प्रकाश्ति हो गया है। इसी तरह अब क़ुरआन-ए-मजीद अंग्रेज़ी अनुवाद हज़रत मौलवी शेर अली साहब वाला जो था उस को तैयार करने में यह व्यस्त थे। वह भी तक़रीबन तैयार है। इन शा अल्लाह तआला जल्दी ही प्रकाशित हो जाएगा। इस में उनका बहुत काम है। इसी तरह अनुवाद हज़रत मीर इस्हाक साहब वाला जो है इस के भी कुछ सिपारे उन्होंने कर लिए थे। क़ुरआन-ए-करीम के काम में, प्रकाशन में भी बड़ी मेहनत से उन्होंने काम किया है विशेषता ख़त-ए-मंज़ूर के प्रकाशन में।

उनके नाज़िर साहब इशाअत लिखते हैं कि विनीत के उस्ताद भी थे और मामूं सुसर भी थे इस के बावजूद नायब होने की हैसियत से हमेशा इताअत की भावना और बड़ी विनम्रता और आदर से बात करते थे। कभी यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारा उस्ताद हूँ या रिश्ता में तुम्हारे से बड़ा हूँ। उनके विद्यार्थियों में से लिखते हैं कि उन्होंने किलास में बताया कि उन्होंने विद्या प्राप्त करते समय कभी जामिआ से छुट्टी नहीं ली और इस के बाद पढ़ाने के मध्य भी जब जामिआ में पढ़ाते थे कभी छुट्टी नहीं ली। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जो वर्णन है वह है सय्यद बशीरुद्दीन अहमद साहब मुबल्लिग़ सिल्सिला। यह भी क़ादियान के हैं। तिरासी वर्ष की आयु में पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सय्यद सईदुद्दीन साहब सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते थे। निहायत इबादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार, दुआ करने वाले, सादा-स्वभाव के आदमी थे। मरहूम मूसी भी थे। पीछे रहने वालों में तीन बेटे छोड़े हैं और तीनों बेटे अंजुमन के दफ़्तर में काम कर रहे हैं।

अगला वर्णन बिशारत अहमद साहब हैदर वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी क़ादियान पुत्र फ़ैज़ अहमद साहब शहना का है। उनकी पिछले दिनों इकहत्तर वर्ष की आयु में वफ़ात हो गई इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह मरहूम हज़रत अब्दुल करीम साहब के पोते थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुत्ता काटने वाली (घटना) का निशान थे। जो हज़रत अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का हल्काए कुत्ते के काटने का मुआमला था यह उनके पोते थे और यह ज़िंदगी वक़्फ़ करके कर्नाटक से क़ादियान आए और फिर मद्रस्सा अहमदिया में तालीम हासिल करने के बाद अलग अलग दफ़्तरों में काम किया और फिर इंचार्ज विभाग रिश्ता नाता निर्धारित हुए। वहां ख़िदमात की और छयालीस वर्ष तक सिल्सिला की ख़िदमत की। सुविधाएँ कम होने के बावजूद बड़ी सफ़ैद पोशी से और सादगी से गुज़ारा किया। बड़ी सादा ज़िंदगी थी। बड़े अच्छे आचरण के और मिलनसार इन्सान थे। मरहूम मूसी थे। पत्नी के अतिरिक्त तीन पुत्रियाँ हैं जिनको उन्होंने शिक्षा भी अच्छी दिलवाई और फिर वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी से उन सब की शादियां कीं।

अगला वर्णन आदरणीय डाक्टर मुहम्मद अली ख़ान साहब अमीर जमाअत अहमदिया ज़िला पेशावर का है। 67 वर्ष की आयु में पिछले महीने उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उन्होंने ख़ुद बैअत की थी। जब यह वहां एफ़.एस.सी के विद्यार्थी थे। कहते हैं कि मैं अपने ताया की दुकान थी वहां बैठा हुआ था तो एक व्यक्ति आया जो बड़ा सम्मानित था और जब चला गया तो ताया ने उनको कहा तुम जानते हो यह क़ादियानी था और क़ादियानी बहुत अच्छे लोग होते हैं । कहते हैं यह मेरा जमाअत से पहला परिचय था। फिर मैडीकल कॉलेज में एक उनके क्लास फ़ैलो थे जो अहमदी थे। उन्होंने हज़रत-ए-ईसा के बारे में उनसे पूछा कि क्या विश्वास है? ज़िंदा मानते हो या देहांत प्राप्त करे चुके? तो डाक्टर मुहम्मद अली साहब ने कहा कि मैं तो उनको फ़ौत शुदा मानता हूँ। इस पर उस अहमदी विद्यार्थी को ख़्याल हुआ कि फिर उनको तब्लीग़ करनी चाहिए। बहरहाल फिर मिशन हाऊस ले गए वहां उन्होंने जमाअत का परिचय करवाया। वहां बिशारत बशीर सिंधी साहब मुरब्बी थे और उनको पतलून क़मीज़ में देखा तो प्रभावित हुए कि मौलवी भी हैं और बड़े माडर्न मौलवी हैं। बहरहाल बिशारत बशीर साहब ने उनको दावतुल अमीर पढ़ने के लिए दी और वह कहते हैं कि मैंने उसी दिन पढ़ी तो ख़त्म करते ही मुझे यक़ीन हो गया कि अहमदियत सच्ची है।

1973 ई. में उन्होंने बैअत की और 1974 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्ला ने उनकी बैअत मंज़ूर फ़रमाई। 1974 ई. में जब वह अहमदी हो गए तो इस में उपद्रव भी शुरू हो गए और भीड़ की सूरत में अपने कॉलेज से लड़कों ने उनको पकड़ के कहा कि अहमदियत से इन्कार करो। (पता लग गया कि अहमदी है) तुम्हें शहीद कर देंगे या क़तल कर देंगे। बहरहाल कॉलेज की इंतिज़ामिया कुछ नहीं कर सकी। उस वक़्त यूनीवर्सिटी के चांसलर बाचा ख़ान के बेटे अली ख़ान थे। वह वहां आए और उनको उन लोगों से बचा कर अपने साथ अपनी सवारी में ले गए और शहर से बाहर जा के उनको छोड़ दिया। यह कहते हैं वहां से मैं पैदल, नंगे-पाँव अपने गांव पहुंचा और बाप ने कहा कि तुम अपने आपको भी तकलीफ़ में डाल रहे हो और हमें भी बदनाम कर रहे हो। क्यों नहीं अहमदियत छोड़ देते। उन्होंने कहा मैं अहमदियत नहीं छोड़ सकता। बहरहाल कहते हैं मेरा पिता साहब से भी मुबाहिसा जारी रहा और हालात की ख़राबी की वजह से तालीम भी जारी नहीं रख सका। बड़े बुरे हालात थे लेकिन अहमदियत पर क़ायम रहे। एक दिन उनके पिता साहब ने कहा कि देखो इस मसला को ख़त्म करो। छोड़ो अहमदियत। तो उन्होंने कहा कि इस को ख़त्म करने का मेरा एक ही हल है कि जब आप मेरा खाना भिजवाते हैं तो इस में ज़हर मिला दें ताकि मैं मर जाऊं और आपका मसला हल हो जाए। पिता को उन्होंने कहा क्योंकि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत को नहीं छोड़ सकता और इस के बाद आपके पिता साहब ने फिर कभी आपको नहीं कहा कि अहमदियत छोड़ दो। उनके पिता साहब की वफ़ात हुई है तो आप उनकी वफ़ात पर गए परन्तु नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ी। लोगों ने कहा कि क़बायली रिवायात के बड़े ख़िलाफ़ हैं और बड़ी नफ़रत का इज़हार किया। कैसा बेटा है बाप का जनाज़ा नहीं पढ़ा तो उन्होंने कहा कि मेरे लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ज़्यादा महत्व रखते हैं बाक़ी सब बाद में। इसी तरह उनकी माता ने उनके साथ बहुत बुरा सुलूक किया। उन्होंने कहा तुम मेरे बेटे नहीं हो और हर चीज़ से, जायदाद इत्यादि से उनको बाहर कर दिया तो उस के बाद फिर अपने गांव नहीं गए लेकिन माता की मदद करते रहे। और अपने ताया के घर जाया करते थे। वहां से माता का ख़्याल रखते रहे। उनकी माली इमदाद भी करते रहे। वह ख़ुद भी जब फ़ौत हुई हैं तो उनका जनाज़ा भी नहीं पढ़ा। इसी तरह उन्होंने अपने एक छोटे भाई को भी अहमदी कर लिया था। उन्होंने भी जनाज़ा नहीं पढ़ा। और इस पर फिर लोगों ने एतराज़ किया कि कैसे बेटे हैं। पर उन्होंने यही कहा कि जहां तक जमाअत की ग़ैरत का सवाल है ये लोग क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को गालियां देते रहे इसलिए हम जनाज़ा नहीं पढ़ सकते। उन्होंने ग़ैरमामूली ग़ैरत दिखाई। सत्ताईस वर्ष उन्होंने फ़ौज में ख़िदमत की। लैफ़्टीनैंट कर्नल के ओहदे से रिटायर्ड हुए। डाक्टर थे। रिटायरमैंट पर उनको सदारती तमग़ा इमतियाज़ मिल्ट्री भी मिला। इसके बाद ये नसीर टीचिंग हॉस्पिटल पिशावर में अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर के तौर पर काम करते रहे और हैड आफ़ दी डिपार्टमैंट बिभाग साईकालोजी भी रहे। बत्तीस वर्ष की आयु में उनको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने सरहद और ज़िला पिशावर और पिशावर जमाअत का अमीर निर्धारित फ़रमाया था। 1985 ई. में उनको वक़्फ़-ए-जदीद के बोर्ड आफ़ डायरैक्टर्ज़ में निर्धारित कर दिया। अंतिम समय तक इसी पोज़ीशन में रहे, वक़्फ़-ए-जदीद के बोर्ड आफ़ डायरैक्टर्ज़ के मैंबर रहे। इसी तरह फ़ज़ल-ए-उमर फ़ाउंडेशन और ताहिर फ़ाउंडेशन और स्टैंडिंग शूरा के भी मैंबर थे। उनके छोटे भाई कर्नल अय्यूब साहब हैं जिनका मैंने वर्णन किया उन्होंने भी अहमदियत क़बूल कर ली। और शम्सुद्दीन ख़ान साहब अमीर सूबा सरहद की साहबज़ादी से उनकी शादी हुई थी। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी, एक बेटा और तीन बेटियां हैं। बेटा जो है वक़्फ़ नौ में है और आजकल हियूमैनिटी फ़रस्ट के अधीन तनज़ानिया में ख़िदमत कर रहे हैं। यह लिखते हैं कि डाक्टर मुहम्मद अली ख़ान साहब सच्चाई, दियानतदारी, बे नफ़सी और खरे पन में अपना एक ख़ास इन्फ़िरादी स्थान रखते थे। कभी भी दौलत, अख़राजात, दुनियावी अम्वाल या किसी चीज़ का वर्णन नहीं करते। उनके हर बच्चे ने यही बात लिखी है। और हमेशा निहायत ही मुतमईन और ख़ुश ज़िंदगी गुज़ारी। उन्होंने पिशावर के हर किस्म के निहायत मुश्किल हालात में निहायत प्यार और ख़ुदा तआला की मदद-ओ-नुसरत पर भरोसा करते हुए पिशावर जमाअत की क़ियादत की। पिशावर के लोग उनकी वफ़ात पर बहुत दुखी हैं। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा प्रेम था और उनकी इताअत भी मिसाली थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी मुहब्बत का ताल्लुक़ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़ का ताल्लुक़ था। अल्लाह तआला की तौहीद के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहने वाले बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे।

अगला वर्णन आदरणीय मुहम्मद रफ़ी ख़ान शहज़ादा साहब रब्वाह का है जो 30 मार्च को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी आयु बयासी वर्ष थी। मरहूम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत ग़ुलाम रसूल साहब अफ़ग़ान रज़ियल्लाहु अन्हु और आयशा पठानी साहबा के नवासे और हज़रत अब्दुल सत्तार ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु प्रसिद्ध बुज़ुर्ग साहब के पड़ नवासे थे। इबादत करने वाले और जवानी से ही तहज्जुद गुज़ार थे। दीन की ग़ैरत रखने वाले थे और बड़ा जोश रखते थे। बड़ी पाकीज़ा शख़्सियत के मालिक थे। आख़िरी बीमारी में हस्पताल में सांस की तकलीफ़ के बावजूद क़ुरआन शरीफ़ ऊंची आवाज़ में पढ़ते रहते थे। यह अबू ज़हबी में एयर फ़ोर्स में जब भर्ती हो गए तो कुछ अरसा बाद फिर अबू ज़हबी चले गए। वहां एयर फ़ोर्स की असैंबली में किसी मौलवी ने कहा कि क़ादियानी वाजिबुल क़तल हैं तो उन्होंने बड़ी जुर्रत से खड़े हो कर कहा कि मैं अहमदी हूँ मुझे क़तल करो लेकिन बहरहाल फिर वहां से उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया और पाकिस्तान आ गए। यहां आ कर अपने मैडीकल स्टोर खोला और इस दौरान में दारुल रहमत (राजीकी) के सदर मुहल्ला भी रहे। इसी तरह एम.टी. ए के प्रोग्राम पश्तो मुज़ाकरा की कम-ओ-बेश पच्चास क़िस्तों में शिरकत की। मुहल्ले के हर व्यक्ति के साथ उनका निहायत शफ़क़त भरा और विनम्र सुलूक था। लोगों की ख़ामोश से माली मदद किया करते थे। मूसी थे। पत्नी के इलावा दो बेटे और चार बेटियां छोड़ी हैं।

अगला वर्णन अय्याज़ यूनुस साहब आस्ट्रेलिया का है। उनकी चौबीस मार्च को आस्ट्रेलिया की स्टेट न्यू साउथ वेल्ज़ में सैलाबी पानी में डूब जाने की वजह से वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। बड़े ख़िदमत करने वाले ख़ादिम थे। उन्होंने सदर साहब को कहा कि आपको किसी काम की भी ज़रूरत हो तो मुझे जब भी हुक्म करेंगे मैं हाज़िर हूँगा। हमेशा हरवक़त ख़िदमत के लिए हाज़िर रहने वाले थे और हर एक को कहा हुआ था कि मेरे घर के दरवाज़े खुले हुए हैं जब भी ज़रूरत हो मदद की, आ जाओ। हर एक की बढ़-चढ़ कर मदद करने वाले थे। नौजवान थे अभी शादी भी नहीं हुई थी। बहरहाल उनकी वफ़ात पर हुकूमत ने माता पिता को पाकिस्तान से आने के लिए वीज़ा भी दिया और हुकूमती नुमाइंदों की मौजूदगी में उनकी तदफ़ीन हुई।

अगला वर्णन मियां ताहिर अहमद साहब पुत्र मियां क़ुर्बान हुसैन साहब का है जो वकालत माल सालिस रब्वाह के साबिक़ कारकुन थे और इदरीस अहमद साहब के पिता थे जो हमारे इस्लामाबाद में यहां के प्राजैक्ट इंजीनियर हैं। 67 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। स्थानीय जमाअत में सैक्रेटरी तर्बीयत थे। नायब सदर और ज़ईम अंसारुल्लाह के तौर पर भी ख़िदमत करते रहे। तहज्जुद गुज़ार और नवाफ़िल की अदायगी करने वाले, क़ुरआन-ए-मजीद की बाक़ायदा तिलावत करने वाले थे। मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटियां और तीन बेटे छोड़े हैं।

अगला वर्णन रफ़ीक़ आफ़ताब (यू.के) का है जो फ़ारूक़ आफ़ताब साहब के पिता थे। उनकी भी पिछले महीना अप्रैल में तरेसठ वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। फ़ारूक़ साहब लिखते हैं कि मेरे पिता बहुत ख़ूबीयों के मालिक थे। विनम्र, शरीफ़ उल-नफ़स, हर एक के साथ मेल मिलाप रखने वाले, ख़ुश-मिज़ाज और काबिल-ए-एहतिराम। ख़ुश-मिज़ाज थे। लोगों का एहतिराम करने वाले, मेहमान नवाज़ और बहुत सारे लोगों ने हमें फ़ोन करके यही बताया है और उन ख़ूबियों की गवाही दी है। बहुत मुख़लिस और फ़िदाई थे। बच्चों को भी ख़िलाफ़त के निकट रहने की तरफ़ हमेशा तवज्जा दिलाई और इसी का

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

नतीजा है कि बच्चे जमाअत की ख़िदमत भी कर रहे हैं।

अगला वर्णन आदरणीया ज़रीना अख़तर साहबा पत्नी मिर्ज़ा नसीर अहमद साहब चिट्ठी मसीह जामिआ अहमदिया यू.के के उस्ताद का है जो पिछले महीना वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह भी सहाबा की औलाद में से थीं और बड़ी साबिर शाकिर, अपने माता पिता और सास और सुसर सबकी ख़िदमत का उन्होंने हक़ अदा किया। वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी पति के साथ वफ़ा और सब्र से गुज़ारा किया। घाना में रहें तो बड़े बुरे आर्थिक हालात के बावजूद बड़े सब्र और शुक्र से उन्होंने बच्चों के साथ गुज़ारा किया। कभी मुँह पर शिकवा नहीं लाई। मरहूमा मूसिया थीं। उनके एक बेटे मिर्ज़ा तौक़ीर अहमद वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं। एम.टी.ए में काम कर रहे हैं।

अगला जनाज़ा हाफ़िज़ मुहम्मद अकरम साहब का है जो इसी महीने ताहिर हार्ट में अस्सी वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा से आई थी और इसके बाद उनके दादा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में तहरीरी बैअत की थी। हाथों पर बैअत तो नहीं हुई लेकिन तहरीरी बैअत की थी। उनके एक नवासे अब्दुल खबीर रिज़वान यहां दफ़्तर पी.ऐस. यू.के में ख़िदमत कर रहे हैं। उन्होंने भी जमाअत की ख़िदमत के लिए अपने आपको पेश किया और तसदीक़ के लिए जब मुहम्मद अहमद साहब मज़हर जो ज़िला फैसलाबाद के साबिक़ अमीर थे उनके पास गए तो उन्होंने कहा आपने दीन की ख़िदमत करनी है। आप यहां मेरे पास दीन की ख़िदमत करें और वहां फिर फैसलाबाद जमाअत में बहैसीयत कारकुन आपने सारी उमर गुज़ारी और हमेशा दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दी। अपने आप को वक़्फ़ समझा। मूसी थे। अपना हिस्सा जायदाद भी अपनी ज़िंदगी में अदा कर दिया। बड़े तहज्जुद गुज़ार और बिलानाग़ा तहज्जुद अदा करने वाले। फैसलाबाद में बहुत से बच्चों को उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने और हिफ़्ज़ कराने की तौफ़ीक़ पाई। अपने छोटे बेटे को भी क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ करवाया।

अगला वर्णन आदरणीय चौधरी नूर अहमद नासिर साहब का है जो पिछले दिनों बयासी वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। यह चौधरी मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब दरवेश क़ादियान के सबसे बड़े बेटे थे। उनके दो बेटे अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी हैं। एक तो मंसूर अहमद नासिर हैं जो हमारे लाइबेरिया के स्कूल में प्रिंसिपल हैं और दूसरे मसरूर अहमद मुज़फ़्फ़र घाना में बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमत सिल्सिला की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और ये दोनों बेटे मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपने बाप के जनाज़ा में शामिल नहीं हुए थे। मरहूम मूसी थे।

अगला जनाज़ा आदरणीय महमूद अहमद मिन्हास साहब पुत्र हकीम अबैदुल्लाह मिन्हास साहब का है जो पछत्तर वर्ष की आयु में पिछले महीने वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके एक बेटे राशिद महमूद मिन्हास मुबल्लिग़ हैं वह कहते हैं मरहूम एक दरवेश सिफ़त इन्सान थे। बेशुमार ख़ूबीयों के मालिक थे। बाक़ायदगी से तहज्जुद अदा करने वाले, ख़िलाफ़त के शैदाई, ग़रीबों और बेकसों की मदद करने के लिए हर वक़त तैयार थे। उनके यह बेटे भी घाना में मैदान-ए-अमल में होने की वजह से जनाज़ा में शामिल नहीं हुए। इसी तरह एक दूसरे बेटे मलेशिया में होने की वजह से शामिल नहीं हुए।

अल्लाह तआला इन सब मरहूमीन की औलादों को, उनके परिजनों को सब्र और हौसला अता फ़रमाए और इन सबके दर्जात बुलंद फ़रमाए। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। जुमा की नमाज़ के बाद इनकी नमाज़ जनाज़ा अदा करूंगा। इन शा अल्लाह ।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

उठा उसे नूर को हासिल करने वाला किसी सूरत में नहीं कह सकते। नूर को वही पाता है जो अल्लाह तआला की तरफ़ क़दम बढ़ाता है। वजूद बारी पर दलालत करने के लिए इस जगह दो सिफ़ात का वर्णन किया गया है। अज़ीज़ और हमीद। अज़ीज़ के अर्थ ग़ालिब और हमीद के अर्थ काबिल-ए-तारीफ़ के हैं। इन दो सिफ़ात का चुनाव इस लिए किया गया है कि एक अमली रोशनी पर दलालत करता है और दूसरा इलमी पर। अज़ीज़ से मिल कर इन्सान अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ जाता है और ज़ाहेरी अंधेरे अर्थात तकालीफ़ और कष्ट दूर हो जाते हैं। और हमीद से मिलकर इन्सान अपने अंदरूनी दुश्मन शैतान पर ग़ालिब आ जाता है और बातिनी अंधेरे अर्थात संदेह और शुबहात और जहालत दूर हो जाते हैं।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा से ये दोनों काम हुए। अरबों की ज़िल्लत और मुसीबत और दरिद्रता भी दूर हुई। और उनकी जहालत और शिर्क और अख़लाक़ी कमज़ोरी भी दूर हुई। एक तरफ़ वे सब दुनिया के बादशाह हो गए। दूसरी तरफ़ वे सब दुनिया के मुअल्लिम हो गए। अरबों की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले की हालत और आप के बाद की तबदीली का इस तारीख़ी वाक़िया से कुछ अंदाज़ा हो सकता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना में जब ईरान पर चढ़ाई हुई तो ईरान के बादशाह ने अपने कमांडर इन चीफ़ को यह कहला भेजा कि उन लोगों को कुछ इनाम का वादा देकर जंग को ख़त्म करो। और इनाम भी निहायत हक़ीर था। अर्थात हर सिपाही एक-एक दो-दो दीनार। इस वाक़िया से मालूम होता है कि अरब अपनी पड़ोसी क़ौमों की नज़र में निहायत ग़रीब और मुहताज और कम हिम्मत थे। लेकिन इस्लाम ने उनको क्या बना दिया। वे इस से ज़ाहिर है कि उन्होने न केवल ईरान को फ़तह किया बल्कि शाम, फ़लस्तीन, मिस्र, अनातूलिया, आरमीनीया, इराक़, शुमाली अफ़्रीक़ा, हसपानीया, अफ़ग़ानिस्ता, हिंद और चीन तक भी पहली सदी के अंदर फ़तह कर लिए।

सहाबा जो ग़रीब औरमध्यवर्गीय लोग थे, ऐसे ऐसे दौलतमंद हो गए कि एक सहाबी अबदुर्रहमान बिन औफ़ जब फ़ौत हुए तो अढ़ाई करोड़ रुपया उनकी जायदाद निकली जो आजकल के लिहाज़ से बहुत बड़ी दौलत है क्योंकि उस वक़्त रुपया की क़ीमत बहुत ज़्यादा होती थी।

दूसरी तबदीली भी ज़ाहिर है। अरब के लोग या तो लिखने को बुराई समझते थे और किसी किस्म का इलम भी उनमें नहीं पाया जाता था, सारी दुनिया के उलूम के धारक हो गए। तारीख़ की बुनियाद उन्होंने डाली। सिर्फ-ओ-नहव,(व्याकरण) अर्थ, वर्णनशैली, शब्दकोश को उन्होंने कमाल तक पहुंचा दिया। फ़िक़्ह और फ़लसफ़ा फ़िक़्ह और मंतिक़ और हिक्मत और तिब्ब और सियासत और इंजीनियरिंग और आंकड़ा और बीजगणित और रसायन विज्ञान और खगोल विद्या इत्यादि बीसियों उलूम या ईजाद किए या उन्हें छोटी हालत से बढ़ा कर कमाल तक पहुंचाया। और आज यूरोप के शोधकर्ताओं ने स्वीकार किया हैं कि यदि मुस्लमान अरब न होते तो आज दुनिया इलम की इस मंज़िल पर न होती जहां अब है। और रूहानियत में जो अरबों ने तरक़्क़ी की इस की उदाहरण तो इब्तिदा-ए-आलम से इस वक़्त तक और किसी क़ौम में पाई ही नहीं जाती।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 438-439 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 2 का शेष

तआला की हिफ़ाज़त में आ जाते हैं और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने के कारण से आसानियों और फ़ज़लों को हमेशा के लिए क़ायम रहने वाली हालत उनकी बन जाती है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (नूर : 53) जो लोग अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करें और अल्लाह से डरें और उसका तक़्वा इख़तियार करें वह बा-मुराद हो जाते हैं उनको सफ़लता मिलती हैं उन्हें फ़ुतूहात मिलती हैं वह अपने मक़ासिद को प्राप्त कर लेते हैं। अत: सफ़लता और फ़ुतूहात और अल्लाह तआला के इनामात का वारिस बनने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों पर चलने वाले और प्रत्येक बात को सुन कर इताअत करने वाले हैं और जमाअत की सफ़लता और प्रगति भी इसी से जुड़ी हैं। एक व्यक्ति चाहे वह औरत है या पुरुष जब बैअत में आता है तो यह अह्द करता है कि मैं केवल अपने अस्थाई और दुनियावी फ़ायदे को ही सब कुछ नहीं समझता बल्कि मेरा दीं मुझे हर चीज़ पर मुक़द्दम है। मैं जमाअत के निज़ाम और उस की प्रगति के लिए प्रयास करूँगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: एक हक़ीक़ी अहमदी को बड़े प्रयास से अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों पर नज़र रखने की आवश्यकता है और इसी में हमारा जीवन है। यदि यह नहीं तो हमारी जीवनियाँ ख़त्म हो जाएँगी। कुछ दिन का यह सांसारिक जीवन है इस के बाद फिर ख़ौफ़नाक अंजाम भी हो सकता है। अल्लाह तआला प्रत्येक को इस से बचाए। अल्लाह तआला अपने अहकामात पर अनुकरण करने के लिए जहां इस संसार में उस के लिए भलाई के सामान पैदा फ़रमाता है वहां अगले जहान में भी उस से कई गुना सवाब का अधिकारी बनाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं इन लड़कियों से भी कहता हूँ जो यहां पली बढ़ी हैं या जो पाकिस्तान से आकर यह समझती हैं कि इस समाज में औरत के बड़े हुक़ूक़ हैं और यहां आज़ादी है और इस आज़ादी के कारण से उन क़ौमों की तरक़्क़ी है। याद रखें उनको यदि कोई दुनियावी तरक़्क़ी मिल रही है तो उनकी मेहनत के कारण से और दुनियावी ज्ञान में तरक़्क़ी के कारण से। दीन का और रूहानियत का ख़ाना उनका बिल्कुल ख़ाली है। उनको इस से कोई उद्देश्य नहीं कि ख़ुदा है या नहीं या ख़ुदा तआला के अहकामात हैं और उन पर अनुकरण करना ज़रूरी है या नहीं। परन्तु एक मोमिना और मोमिन जो इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में दीन की ख़ातिर शामिल हुआ है अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने के लिए शामिल हुआ है तो उसे याद रखना चाहिए कि दीन ख़ुदा तआला और उस के रसूल के अहकामात पर अनुकरण करने का नाम है। आप यदि ख़ुदा तआला के हुक्मों पर चलते हुए मेहनत करेंगी, ज्ञान में बढ़ेंगी तो ये चीज़ें तो मिल ही जाएँगी परन्तु एक सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जिससे दुनिया-दार वंचित हैं और जो इन्सानी जीवन का उद्देश्य है उसे भी प्राप्त करने वाली बनेंगी और वह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता है, अपनी आक़िबत सँवारनी है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आप के मानने वालों के ज्ञान और विवेक में बढ़ने का या तरक़्क़ी का वादा फ़रमाया है। अत: यह दीनी और दुनियावी सफ़लता तो उन्हें मिलनी हैं या हमें मिलनी हैं परन्तु जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों के साथ चिमटे रहेंगे वह उस के फ़ज़लों को भी प्राप्त करने वाले होंगे। जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का दावा किया है तो फिर हमारे हर काम में बरकत तभी पड़ेगी जब हम इस दुनियावी आज़ादी पर चलने की बजाय दीन को संसार पर मुक़द्दम करेंगे और जब यह होगा तो संसार हमारी लौंडी बन जाएगी। संसार आपके पीछे चलेगी। दुनिया वाले फिर आपसे हिदायत प्राप्त करेंगे। जिनको ख़ुदाई वादों पर विश्वास नहीं वह बेशक यह समझें कि इतनी छोटी सी जमाअत किस तरह संसार को अपने पीछे चला सकती है? परन्तु हम देखते हैं कि इस के आसार शुरू हो गए हैं। जर्मनी में ही आप देख लें कि आज से दस वर्ष पहले जमाअत की पहचान इस मुल्क में थी इस से दस बीस गुना ज़्यादा पहचान है। पढ़े लिखे वर्ग में हमारी बात का जो अब वज़न है इस से पहले उस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अत: क़ौमों की तरक़्क़ी इसी तरह मंज़िलें तै करती है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से प्रत्येक चढ़ने वाला दिन हमें इस तरक़्क़ी की मंज़िल दिखाता है। परन्तु हमारी यह पहचान दीन से हट कर नहीं है। हमेशा याद रखें कि दीं पर क़ायम रहते हुए ही जमाअत अहमदिया की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कोई अहमदी जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों से जान-बूझ कर बाहर निकलता है वह अहमदी ही नहीं है। कुछ ग़लतियाँ हो जाती हैं, कोताहियों हो जाती हैं, कमज़ोरियाँ पैदा हो जाती हैं, परन्तु यदि जान बूझ कर कोई इन अहकामात से बाहर निकले तो इस काअर्थ है कि वह अपने आप को इस निज़ाम से बाहर निकालने का प्रयास कर रहा है जो अल्लाह तआला ने क़ायम फ़रमाया है। इसी लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी शरायते बैअत में यह भी शर्त रखी है कि :

"रस्मों के अनुकरण और इच्छाओं के अनुसरण से बाज़ आ जाए गा और क़ुरआन शरीफ़ की हुकूमत को पूर्णता अपने सिर पर स्वीकार करेगा और ख़ुदा के आदेशों और रसूल के आदेशों को अपने हर एक राह में दस्तूरुल अमल क़रार देगा।"

अर्थात एक अहमदी रस्मो रिवाज के पीछे नहीं जाएगा। इच्छाओं, दुनिया की लालच और हवस और फ़ैशन, उनके पीछे नहीं जाएगा। ग़लत बातों के पीछे नहीं जाएगा और क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात जो हैं उन पर मुकम्मल तौर पर अनुकरण करने का प्रयास करेगा और जो अल्लाह तआला और उस के रसूल ने बताया है उस को उसूल बना कर उस पर अपन जीवन गुज़ारने का प्रयास करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: यह उन शरायत में से एक शर्त है जिस पर एक अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का दावा करता है। पुरुष हो या महिला यह दोनों के लिए है। यदि कोई अपने रस्मो रिवाज के पीछे चल रहा है और समाज के ग़लत तौर-तरीक़े उस को अपनी ओर खींच रहे हैं तो बैअत का हक़ अदा नहीं कर रहा। यदि संसार की प्राथमिकता और समाज का प्रभाव उसे दीन की बातों पर अनुकरण करने से रोक रहा है तो ये कमज़ोरी उसे बैअत के हक़ की अदायगी से दूर ले जा रही है। यदि क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात को कोई अनुकरण योग्य न होना क़रार देता है तो वह न ही बैअत का हक़ अदा कर रहा है, न ही इस्लाम में शुमार हो सकता है। यदि अल्लाह तआला और उस के रसूल की बातों पर अनुकरण नहीं तो अहमदी होने का दावा भी झूठ है। अहमदियत है ही अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक हुक्म और प्रत्येक कथन पर अनुकरण की जहाँ तक सम्भव हो प्रयास और पूर्ण इताअत का नाम, और जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला का हम पर यह एहसान है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान कर फिर ख़िलाफ़त के निज़ाम से जोड़ दिया जिस के माध्यम से लोग जमाअत को, मर्दों को औरतों को भी, जवानों को भी बूढ़ों को भी बार-बार अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत की ओर ध्यान दिलाया जाती है और इसी तरह निज़ाम-ए-जमाअत भी इस काम के लिए निर्धारित है और निज़ाम जमाअत अर्थात जो ओहदेदार निर्धारित हैं उनको ये काम करने चाहिऐं और तक़्वा पर चलते हुए करने चाहिऐं। यदि हम में से कोई इन बातों की ओर ध्यान नहीं देता जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के अहकामात की ओर ध्यान दिलाती हैं तो वह पुरुष हो या महिला अपने ईमान को ज़ाए कर रहा है। वह जमाअत की मजमूई ताक़त को नुक़्सान पहुंचा रहा है। वे संसार के सामने अपने अनुकरण और शिक्षा में अपवाद के कारण से, मतभेद के कारण से, ग़ैरों के सामने भी इस्लाम की ग़लत तस्वीर प्रस्तुत कर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: प्रत्येक अहमदी पुरुष और औरत की ज़िम्मेदारी है कि अपने जायज़े लें कि हम किस हद तक اَطِيْعُوا اللّٰهَ और اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ परअनुकरण करने का प्रयास कर रहे हैं। इस्लाम कोई ऐसा धर्म नहीं है जो ऐसे अहकामात देता हो जिन में हुक्म नहीं है या ऐसा हुक्म देता हो जिस से इन्सान को और समाज को लाभ न पहुंच रहा हो या अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें किसी ऐसी इताअत का हुक्म दे रहे हों जो केवल इन्सान को पाबंद करना चाहती अल्लाह तआला को हमारी किसी पाबंदी की आवश्यकता नहीं है बल्कि जो अहकाम हैं हमारे फ़ायदे के लिए हैं, हमारी जीवनों को संवारने के लिए हैं बल्कि यह इताअत जहां हमारे जीवनों को सँवारती है अल्लाह तआला की प्रसन्नता का कारण बनाते हुए सफ़लता पाने वाला बनाएगी। अल्लाह तआला एक जगह फ़रमाता है कि जो मोमिनीन अल्लाह तआला और उस के रसूल की ओर बुलाए जाने पर यह कहते हैं कि سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا कि हमने सुना और हमने मान लिया तो फ़रमाया कि اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ।और वही लोग हैं जो सफ़ल हुआ करते हैं। सुन कर इताअत करने वाले लोग ही सफ़लता पाने वाले हैं। उन्हें खुशहाली भी अता होती है। वे सफ़लता भी प्राप्त करने वाले हैं। वे इन लाभदायक और नेक इच्छाओं को प्राप्त करने वाले हैं जिनकी वह इच्छा करते हैं या प्राप्त करना चाहते हैं। निश्चित एक मोमिन जो है इस की इच्छाएं हमेशा नेक ही हुआ करती हैं वह बुरी बातों की तो इच्छा नहीं कर सकता और फिर ख़ुशी और अच्छी हालतों के पाने वाले भी होते हैं। इन्ही लोगों को जो इताअत करते हैं ख़ुशीयां भी मिलती हैं और उनकी हालतें भी बेहतर होती हैं। वे अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाते हैं और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने के कारण से आसानियों और फ़ज़लों को

हमेशा के लिए क़ायम रहने वाली हालत उनकी बन जाती है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (नूर : 53) जो लोग अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत करें और अल्लाह से डरें और उसका तक़्वा इख़्तियार करें वह बा-मुराद हो जाते हैं उनको सफ़लता मिलती हैं उन्हें फ़ुतूहात मिलती हैं वह अपने मक़ासिद को प्राप्त कर लेते हैं। अत: सफ़लता और फ़ुतूहात और अल्लाह तआला के इनामात का वारिस बनने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों पर चलने वाले और प्रत्येक बात को सुन कर इताअत करने वाले हैं और जमाअत की सफ़लता और प्रगति भी इसी से जुड़ी हैं। एक व्यक्ति चाहे वह औरत है या पुरुष जब बैअत में आता है तो यह अह्द करता है कि मैं केवल अपने अस्थाई और दुनियावी फ़ायदे को ही सब कुछ नहीं समझता बल्कि मेरा दीं मुझे हर चीज़ पर मुक़द्दम है। मैं जमाअत के निज़ाम और उस की प्रगति के लिए प्रयास करूँगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: एक हक़ीक़ी अहमदी को बड़े प्रयास से अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों पर नज़र रखने की आवश्यकता है और इसी में हमारा जीवन है। यदि यह नहीं तो हमारी जीवनियाँ ख़त्म हो जाएँगी। कुछ दिन का यह सांसारिक जीवन है इस के बाद फिर ख़ौफ़नाक अंजाम भी हो सकता है। अल्लाह तआला प्रत्येक को इस से बचाए। अल्लाह तआला अपने अहकामात पर अनुकरण करने के लिए जहां इस संसार में उस के लिए भलाई के सामान पैदा फ़रमाता है वहां अगले जहान में भी उस से कई गुना सवाब का अधिकारी बनाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं इन लड़कियों से भी कहता हूँ जो यहां पली बढ़ी हैं या जो पाकिस्तान से आकर यह समझती हैं कि इस समाज में औरत के बड़े हुक़ूक़ हैं और यहां आज़ादी है और इस आज़ादी के कारण से उन क़ौमों की तरक़्क़ी है। याद रखें उनको यदि कोई दुनियावी तरक़्क़ी मिल रही है तो उनकी मेहनत के कारण से और दुनियावी ज्ञान में तरक़्क़ी के कारण से। दीन का और रूहानियत का ख़ाना उनका बिल्कुल ख़ाली है। उनको इस से कोई उद्देश्य नहीं कि ख़ुदा है या नहीं या ख़ुदा तआला के अहकामात हैं और उन पर अनुकरण करना ज़रूरी है या नहीं। परन्तु एक मोमिना और मोमिन जो इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में दीन की ख़ातिर शामिल हुआ है अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने के लिए शामिल हुआ है तो उसे याद रखना चाहिए कि दीन ख़ुदा तआला और उस के रसूल के अहकामात पर अनुकरण करने का नाम है। आप यदि ख़ुदा तआला के हुक्मों पर चलते हुए मेहनत करेंगी, ज्ञान में बढ़ेंगी तो ये चीज़ें तो मिल ही जाएँगी परन्तु एक सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जिससे दुनिया-दार वंचित हैं और जो इन्सानी जीवन का उद्देश्य है उसे भी प्राप्त करने वाली बनेंगी और वह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता है, अपनी आक़िबत सँवारनी है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आप के मानने वालों के ज्ञान और विवेक में बढ़ने का या तरक़्क़ी का वादा फ़रमाया है। अत: यह दीनी और दुनियावी सफ़लता तो उन्हें मिलनी हैं या हमें मिलनी हैं परन्तु जो अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्मों के साथ चिमटे रहेंगे वह उस के फ़ज़्लों को भी प्राप्त करने वाले होंगे। जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का दावा किया है तो फिर हमारे हर काम में बरकत तभी पड़ेगी जब हम इस दुनियावी आज़ादी पर चलने की बजाय दीन को संसार पर मुक़द्दम करेंगे और जब यह होगा तो संसार हमारी लौंडी बन जाएगी। संसार आपके पीछे चलेगी। दुनिया वाले फिर आपसे हिदायत प्राप्त करेंगे। जिनको ख़ुदाई वादों पर विश्वास नहीं वह बेशक यह समझें कि इतनी छोटी सी जमाअत किस तरह संसार को अपने पीछे चला सकती है? परन्तु हम देखते हैं कि इस के आसार शुरू हो गए हैं। जर्मनी में ही आप देख लें कि आज से दस वर्ष पहले जमाअत की पहचान इस मुल्क में थी इस से दस बीस गुना ज़्यादा पहचान है। पढ़े लिखे वर्ग में हमारी बात का जो अब वज़न है इस से पहले उस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अत: क़ौमों की तरक़्क़ी इसी तरह मंज़िलें तै करती है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से प्रत्येक चढ़ने वाला दिन हमें इस तरक़्क़ी की मंज़िल दिखाता है। परन्तु हमारी यह पहचान दीन से हट कर नहीं है। हमेशा याद रखें कि दीं पर क़ायम रहते हुए ही जमाअत अहमदिया की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:अत: किसी किस्म के एहसासे कमतरी में मुबतला होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि अल्लाह तआला और उस के रसूल की इताअत को अपना ओढ़ना बिछौना बनाने की प्रत्येक अहमदी औरत और पुरुष को प्रयास करनी चाहिए और इसी की आवश्यकता है ताकि हम सफ़लता की मंज़िलों को जल्द से जल्द प्राप्त करने वाले बन सकें। यदि किसी को केवल संसार की इच्छाएं चाहिए ,शोर शराबा चाहिए, रौनक़ें चाहिऐं तो बेशक संसार के पीछे चलें। ऐसे लोगों को यह ज़ाहिरी तथाकथित आज़ादी मिल जाएगी। परन्तु याद रखें इस आज़ादी के पीछे उनकी बेचैनियांहैं। ये संसार वाले लोग हैं वह भी बेचैन हैं और उनकी बेचैनियां नज़र आती हैं। उन लोगों की बाहर जो चमक नज़र आ रही है यह ज़ाहिरी दिखावा है। इसके अंदर कुछ नहीं है। उनके ज़ाहिरी क़हक़हे, डांस, कलब, गुल गपाड़ा, शराबनोशी उनके दलों की बे-सुकूनी को दूर करने के लिए ज़ाहिरी तदबीरें हैं परन्तु बे-मक़्सद और बिना उद्देश्य की तदबीरें हैं। उनकी आज़ादी के पीछे उनके दलों की बेचैनियां हैं जिन्हें इन दुनिया-दारों ने जैसा कि मैंने कहा ख़ौल चढ़ा कर छिपाने की प्रयास किया है। यदि उनके दिलों के अंदर झांक कर देखें तो भयानक नज़्ज़ारे नज़र आते हैं। उनके दिल की बेचैनियां उन्हें क्लबों में ले जाती हैं, शराब-ख़ानों में ले कर जाती हैं, नशों में मुबतला करती हैं। यदि संसार ही सब कुछ है तो फिर संसार के आदाद-ओ-शुमार ये क्यों प्रकट करते हैं ये वास्तविकता है कि आर्थिक दृष्टि से बेहतर मुल्कों में ख़ुदकुशियाँ बढ़ रही हैं। ये सब इस बात का सबूत है कि दिलों में बेचैनियां हैं। अत: यदि दिलों की बेचैनियों को दूर करना है तो उस के लिए ख़ुदा तआला के बताए हुए उसूल पर अनुकरण करने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है। اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ (राद : 29) कि सुनो अल्लाह ही के वर्णन से दिल शांति पाते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: जितना ज़्यादा कोई ख़ुदा तआला की ओर झुकेगा, उसे याद करेगा, इतना ही उस के दिल को शांति प्राप्त होगा। अल्लाह तआला ने यह इन्सानी फ़ित्रत का तक़ाज़ा रखा है कि यदि उसे ह्रदय की शांति चाहिए तो वह ख़ुदा तआला की ओर जाए। दुनियावी लोभ जो है वह दिलों को व्याकुल करते हैं। इस से दलों को सकून नसीब नहीं होते। ख़ुदा करे कि संसार इस बात को समझ ले और सबसे पहले तो हम समझने वाले हों ताकि संसार को इस ग़लाज़त और बे-सुकूनी से बाहर निकालें। हक़ीक़ी आज़ादी हम ने संसार को देनी है और वह आज़ादी ख़ुदा तआला की ग़ुलामी और इताअत में आने में ही है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि : "क़ुरआन से यही मालूम होता है कि अल्लाह तआला का वर्णन ऐसी चीज़ है जो क़ुलूब को इतमीनान अता करता है। जैसा कि फ़रमाया اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ (राद : 29) अत: जहां तक सम्भव है ख़ुदा को याद करता रहे इस से शांति प्राप्त होगी। हाँ उस के वास्ते सब्र और मेहनत की ज़रूरत है। यदि घबरा जाता है और थक जाता है तो फिर ये इतमीनान नसीब नहीं हो सकता। अत: सब्र और मुस्तकिल मिजाज़ी शर्त है।"

फिर आपने फ़रमाया : "अल्लाह तआला के वर्णन से ह्रदय शांति पाते हैं। परन्तु इस की वास्तविकता और फ़िलोसफ़ी यह है कि जब इन्सान सच्चे इख़लास और पूरी वफ़ादारी के साथ अल्लाह तआला को याद करता है और हर वक़त अपने आपको उस के सामने विश्वास करता है इस से एक भय अज़मत इलाही का पैदा होती है। वह भय उस को बुरी वस्तुओं और अवैध चीज़ों से बचाता है और इन्सान तक़्वा और पवित्रता में तरक़्क़ी करता है।"

अत: यह वास्तविकता है इन्सानी जीवन का यह उद्देश्य है इन्सानी जीवन का अल्लाह तआला से सम्बन्ध जोड़ा जाए, उस के अहकामात पर अनुकरण किया जाए और यह उस के वर्णन से ही और इस को याद रखने से ही होगा। और न केवल दलों की शांति के सामान होंगे बल्कि समस्त वे बातें जो अवैध हैं जिनको दुनियादार तो बेशक नए ज़माने की रोशनी समझता है परन्तु ख़ुदा तआला की नज़र में तबाही के गढ़े में डालने वाली हैं उनसे इन्सान बचता रहता है। इस वर्णन से उन समस्त बातों से जो अवैध हैं, जिनके न करने का ख़ुदा तआला ने हुक्म दिया है उस से एक मोमिन पुरुष और महिला बचे रहेंगे। अत: यदि अपने आपको जमाअत में शुमार करवाना है उन हक़ीक़ी अहमदियों में शुमार करवाना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाहते थे तो फिर इस बात का केवल दावा नहीं बल्कि वास्तविकता को भी प्रकट करना होगा कि मैं हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल हूँ तो उन तथाकथित संसारिक आज़ादियों और चकाचौंद से अपने आपको बचाकर हक़ीक़ी मोमिन बन्नूँ। अत: यही हमारा काम है कि हक़ीक़ी मोमिन हमने बनना है यदि अपने आपको बचाना हैं।

मैं यह भी बता दूं कि मैं केवल इलमी बातें नहीं कर रहा। जमाअत में ही बहुत से ऐसे हैं जो इस नुस्ख़े को आज़मा कर दिल्ली सुकून पाने वाले बने हैं और बन रहे हैं। और ये केवल ख़्याली बातें नहीं कि जो दुनियादारी के कारण से अल्लाह तआला की इताअत से बाहर निकलें उन्हें बेचैनियां मिलती हैं बल्कि बहुत सी महिलाए और पुरुष मुझे लिखते हैं कि इन दुनियावी रंगीनियों में हम जो आज़ादी और समाज की तरक़्क़ी समझ कर गए थे, इस दुनिया-दारी में डूब गए थे वह असल में धोका था और अब हमें एहसास हुआ है कि हमने ग़लत किया है इस लिए हमें माफ़ कर दें और दुबारा जमाअत में शामिल कर लें और हम अहद करते हैं कि हम कभी अल्लाह तआला

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 24 June 2021 Issue No.25

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और उस के रसूल की इताअत से बाहर नहीं निकलेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: किसी किस्म के एहसास कमतरी में मुबतला होने की आवश्यकता नहीं है। हमें यह देखना चाहिए कि हमारा दीन हमें क्या कहता है। यदि किसी के घर में कोई ज़ाती समस्याएं हैं तो वह शिक्षा नहीं बल्कि उस के घरेलू समस्याएं हैं या माँ बाप की जहालत है जिसके कारण से कुछ वाक़ियात होते हैं। अल्लाह तआला तो क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि औरतों से नेक व्यवहार करो उनकी भावनाओ का खयाल रखों। औरतों से अदल और इन्साफ़ का व्यवहार करो। निकाह में महर औरत को सुरक्षा प्रदान करने के लिए निर्धारित है। तलाक़ की सूरत में औरत को दिया हुआ माल वापस लेने की मनाही है। नेकी के इजर में औरत पुरुष बराबर हैं। कोई तख़सीस नहीं। औरत की कमाई में पुरुष का कोई हक़ नहीं है। घर चलाने की ज़िम्मेदारी पुरुष पर है न कि औरत पर। पहले ज़माने में भी और कुछ जगह आज भी लड़की के जन्म पर मर्दों और उनके ख़ानदानों की ओर से उनूचित रवैय्ये दिखाए जाते हैं। इस्लाम ने इस की मनाही सख़्ती से की है। उद्देश्य कि बेशुमार हुक्म हैं। अत: हमें यहां की आज़ादी देखकर दीवाना होने की बजाय यह देखना चाहिए कि इस्लाम ने कितनी आज़ादी दी है। अपने दिमाग़ को प्रयोग करके सोचें कि अल्लाह तआला के हुक्मों के लाभ कितने हैं। अत: अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार इबादत करने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले बनें। इताअत करने वालियाँ बनें और दीन को संसार पर मुक़द्दम करके ज़माने के इमाम के काम में मुआविन उया सहायक बनने का प्रयास करें। अल्लाह तआला के फ़ज़लों को समेटने वाली बनें। अल्लाह तआला आप सबको इस की तौफ़ीक़ प्रदान करे। अब दुआ कर लें। ☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

और सम्मान क्या दे सकता है जो अपनी असहायता की ख़ुद शिकायत करता है,औरों की दुआओं को क्या सुन सकता है जिसकी अपनी सारी रात का रोना धोना व्यर्थ गया और चिल्ला चिल्ला कर ईली ईली लेमा सबक़तानी भी कहा परन्तु सुना न गया और फिर इस पर कहना यह कि आख़िर यहूदियों ने पकड़ कर सलीब पर लटका दिया और अपनी आस्था के अनुसार नअनत वाला क़रार दिया। ख़ुद ईसाईयों ने लअनत वाला माना। परन्तु यह कह दिया कि हमारे लिए लअनत वाला हुआ ;हालाँकि लअनत एक ऐसी चीज़ है कि इन्सान इससे कठोर दिल का हो जाता है और वह ख़ुदा से दूर और ख़ुदा इससे दूर हो जाता है। मानो ख़ुदा से इस को कुछ सम्बन्ध ही नहीं रहता। इस लिए मलऊन शैतान का नाम भी है। अब इस लअनत को मान कर और मसीह को मलऊन क़रार देकर ईसाईयों के पास क्या रह जाता है,सच तो यह कि: "लअनत नाल कख नईं रहनदा।" गले पड़ा ढोल है जो ये लोग बजा रहे हैं। अत: उन लोगों के आस्थाओं का कहाँ तक वर्णन किया जाए। हक़ीक़त वही है जो इस्लाम लेकर आया और ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर किया कि मैं इस नूर को जो इस्लाम में मिलता है। उनको जो हक़ीक़त के तलाश करने वाले हों दिखाऊँ। सच यही है कि ख़ुदा है और एक है और मेरा तो यह मज़हब है कि यदि इंजील और क़ुरआन करीम और समस्त नबियों की पुस्तकें भी संसार में न होती तो भी ख़ुदा तआला की तौहीद प्रमाणित थी,क्योंकि उसके चिन्ह इन्सान की फितरत में हैं।

मसीह की इबनीयत (पुत्र होना)

ख़ुदा के लिए बेटा बनान मानो ख़ुदा तआला की मौत का विश्वास करना है। क्योंकि बेटा तो इस लिए होता है कि वह यादगार हो। अब यदि मसीह ख़ुदा का बेटा है तो फिर प्रश्न होगा कि क्या ख़ुदा को मरना है? सारांक्ष यह है कि ईसाईयों ने अपनी आस्थाओं में न ख़ुदा की महानता का ध्यान रखा और न इन्सानी शक्तियों की क़दर की है और ऐसी बातों को मान रखा है कि जिनके साथ आसमानी रोशनी का समर्थन नहीं है। एक भी ईसाई ऐसा नज़र न आया जो चमत्कार दिखा सके और अपने ईमान को इन निशानों से प्रमाणित कर सके जो मोमिनों के होते हैं। यह सम्मान और गर्व इस्लाम ही को है कि हर ज़माना में ताईदी निशान उसके साथ होते हैं और इस ज़माना को भी ख़ुदा ने वंचित नहीं रखा। मुझे इसी उद्देश्य के लिए भेजा गया है कि इन ताईदी निशानों से जो इस्लाम की विशेषता है। इस ज़माना में इस्लाम की सच्चाई दुनिया पर प्रकट करूँ। मुबारक वह जो एक नेक दिल लेकर मेरे पास हक़ लेने के लिए आता है और फिर मुबारक वह जो हक़ देखकर उसको स्वीकार करता है।

जलसा अल-विदा के आयोजन पर हज़रत अक़दस की तक़रीर

प्रादुर्भव का उद्देश्य

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सलीब पर से ज़िन्दा उतर आने और दुर्घटना से बच जाने का क़ुरआन शरीफ़ में सही और विश्वसनीय ज्ञान दिया गया है,परन्तु अफ़सोस कि पिछले हज़ार वर्ष में जहां इस्लाम पर और बहुत सी आफ़तें आईं वहां यह विषय भी अन्धेरे में पड़ गया और मुसलमानों में बदकिस्मती से यह विचार सुदृढ़ हो गया कि हज़रत मसीह ज़िन्दा आसमान पर उठाए गए हैं और वह क़यामत के निकट आसमान से उतरेंगे,परन्तु इस चौदहवीं सदी में अल्लाह तआला ने मुझे मामूर करके भेजा ताकि मैं भीतरी तौर पर जो दोष मुसलमानों में पैदा हो गए हैं उनको दूर करूँ और इस्लाम की वास्तविकता संसार पर प्रकट करूँ। और बाहरी रूप से जो एतराज़ात इस्लाम पर किए जाते हैं उनका उत्तर दूं और दूसरे झूठे धर्मों की वास्तविकता खोल कर दिखाऊँ। विशेषता वह मज़हब जो सलीबी मज़हब है अर्थात ईसाई मज़हब,उसकी ग़लत आस्थाओं का खण्डन करूँ जो इन्सान के लिए ख़तरनाक तथा कष्टदायक हैं और इन्सान की रुहानी शक्तियों के बढ़ने और तरक़्क़ियों के लिए एक रोक हैं।

ईसा इब्ने मरियम के बारे में असल वास्तविकता

इन नें से उनके एक यही विषय है जो मसीह के आसमान पर जाने के बारे में है और जिस में दुर्भाग्य से कई मुसलमान भी उनके सम्मलित हो गए हैं। इसी एक विषय पर ईसाईयत की आधार शिला है क्योंकि ईसाईयत की मुक्ति का आधार इसी सलीब पर है। उनका अक़ीदा है कि मसीह हमारे लिए मस्लूब(सलीब पर चढ़ना) हुआ और फिर वह ज़िंदा हो कर आसमान पर चला गया,जो मानो उसकी ख़ुदाई की दलील है।

जिन मुसलमानों ने अपनी ग़लती से उन लोगों का साथ दिया है वे ये तो नहीं मानते कि मसीह सलीब पर मर गया परन्तु वे इतना ज़रूर मानते हैं कि वह आसमान पर उठाया गया है। परन्तु जो हक़ीक़त अल्लाह तआला ने मुझ पर खोली है वह यह है कि मसीह इब्न मरियम अपने समय के यहूदीयों के हाथों सख़्त सताया गया। जिस तरह पर रास्तबाज़ अपने ज़माना में अज्ञान विरोधियों के हाथों सताए जाते हैं और आख़िर इन यहूदियों ने अपनी षडयन्त्रों और शरारतों से यह कोशिश की कि किसी तरह पर उनका ख़ात्मा कर दें और उनको मस्लूब करा दें। बज़ाहिर वे अपने इन षडयन्त्रों में सफल हो गए,क्योंकि हज़रत मसीह इब्न मर्यम को सलीब पर चढ़ाए जाने का आदेश दिया गया, परन्तु अल्लाह तआला ने जो अपने रासतबाज़ों और मामूरों को कभी नष्ट नहीं करता। उनको इस लअनत से जो सलीब की मौत के साथ जुड़ी थी बचा लिया और ऐसे माध्यम पैदा कर दिए कि वह इस सलीब पर से ज़िंदा उतर आए। इस बात के सबूत के लिए बहुत से तर्क हैं जो विशेष रूप से इंजील ही से मिलते हैं,परन्तु इस समय उसका वर्णन करना मेरा उद्देश्य नहीं, इन घटनाओं को जो सलीब की घटनाएं हैं इंजील में पढ़ने से साफ़ मालूम हो जाता है कि हज़रत मसीह इब्न मर्यम सलीब पर से ज़िन्दा उतर आए और फिर यह ख़्याल करके कि इस देश में उन के बहुत से दुश्मन हैं और दुश्मन भी जान के दुश्मन और जैसा कि वह पहले कह चुके थे कि नबी अपमानित नहीं होता परन्तु अपने वतन में। जिससे उनकी हिजरत का पता मिलता था कि इन्होंने इरादा कर लिया कि इस देश को छोड़ दें और अपने रिसालत के कर्तव्य को पूरा करने के लिए वह बनी इस्राईल की गुम हुई भेड़ों की तलाश में निकले और नसीबैन की तरफ़ से होते हुए अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से कश्मीर में आ कर बनी इस्राईल को जो कश्मीर में मौजूद थे,तब्लीग़ करते रहे और उन का सुधार किया और आख़िर उन में ही वफ़ात पाई। यह बात है जो मुझ पर खोली गई है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 308 से 312 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad